तृतीय अध्याय

विष्णु प्रभाकर की कहानियों में चित्रित विविध समस्याएँ

तृतीय अध्याय

सामाजिकता में नैतिक मूल्य, नैतिकता, संस्कृति आदि के अनुसार मानव की जीवन जीने की प्रणाली इसका प्रयोग जब समाज में अपने आचरण के लिए नहीं होता और किसी दूसरे विचारों को अपने आचरण में लाया जाता है, तब सामाजिक दृष्टि से बाधा का कारण बन जाता है। इसी तरह नैतिक, सामाजिक मूल्यों के संघर्ष में से ही सामाजिक समस्याओं का निर्माण हुआ है, यह बात स्पष्ट है। सामाजिक समस्या का विचार करते समय व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रश्न इन दोनों का अलग विचार किया गया है । लेकिन कुछ व्यक्तिगत प्रश्न आगे चल कर सामाजिक प्रश्न का ही रूप धारण करते है, ऐसा दिखाई देता है। रिश्वतखोरी या अनैतिक संबंध यह व्यक्तिगत स्तर के प्रश्न आगे चल कर सामाजिक प्रश्न बन जाते हैं। अत: समाज में जो परिवर्तन होते हैं उससे ही सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है। औद्योगिकरणों के कारण आज देश में अनेक व्यवसाय वृध्दिगत होते रहे और ग्रामीण भागों में रहनेवाले लोग शहर में आ गये। इसके कारण निवासकी या भोजन की समस्या निर्माण हो गयी। समूह में रहनेवाले व्यक्ति के सामाजिक संबंध टूट जाते है तभी उसमें विघटन होता है। जिस समय व्यक्ति, दल, समुदाय इस पर कोई नियंत्रण नहीं रह जाता उस समय भी उसमें विघटन हो जाता है। वैयक्तिक विघटन व्यक्ति से संबंधित होता है। इसमें व्यक्ति समाज विरोधी आचरण करता है। समाज में बनाए हुए नियमों पर व्यक्ति जब चलता नहीं तब अपना आचरण ठीक नहीं करता उस समय समाज विघटन की शुरुवात होती है।

मानव मानव के संबंध, जाति धर्म वंश के आधारपर संघर्ष अवस्थाओं के कारण संघर्ष, अन्धानुकरण के कारण संघर्ष यान संबंध और सामाजिक नैतिकता

आदि के कारण सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है। मानसिक विकृति के कारण तथा सामाजिक परिस्थिति के कारण जो मनपर तनाव निर्माण होते हैं उनके कारण भी ये समस्याएँ निर्माण होती है। आर्थिक अभाव, यौन संबंध, असंतुष्टता, रुढि परंपरा आदि के कारण भी परिवार में समस्याएँ निर्माण होती हैं। इन समस्याओं का विचार क्रमश: आगे किया गया है।

अ) सामाजिक समस्याएँ --

समाज में व्यक्तियों की मूलभूत आवश्यकताएँ बढती हैं और सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ उसे पूर्ण करने में असमर्थ या अयशस्वी हो जाती हैं तब जो स्थिति पैदा हो जाती है, उसे ही सामाजिक समस्या कहा जाता है। समाज में आएहुए परिवर्तन और उसकी प्रक्रिया से निर्माण हुए सामाजिक विघटन के परिणामों के कारण ही विविध सामाजिक समस्यायें निर्माण होती है। भारतीय समाज जीवन का विचार करते समय हमें यह दिखाई देता है कि औद्योगीकरण, नागरीकरण आदि की निर्मिति होकर इसका परिणाम भारतीय समाज जीवन विघटित होने में हो गया है। परिणाम स्वरुप व्यक्ति में व्यक्तिगत वैफल्य बढ रहा है। व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वनिर्मित कुछ विचार धारा निर्माण कर रहा है। उसके आदर्श में कुछ नवनिर्मित विचार आ रहा है। इन सभी बातों का परिणाम सामाजिक समस्याओं की निर्मिति में हो गया है। आधुनिक युग में इसी कारण सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुआ हैं और होती जा रही हैं। सामाजिक जीवन में, आचार विचार में जब विचलन या परिवर्तन हो जाता है, तब उसका परिणाम व्यक्ति तथा समूह को नीति भ्रष्ट हो जाने के भय से ग्रस्त लेता है और वही समस्या निर्माण होती है।

ब) आर्थिक समस्याएँ --

अर्थ शास्त्रज्ञों ने आर्थिक दृष्टिकोण से समाज का विभाजन तीन वर्गों में किया है - निम्न वर्ग, मध्यवर्ग और उच्च वर्ग। परंतु आर्थिक दृष्टि से इन तीनों

वर्गों के लोगों के जीवन का स्तर एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न रहता है। निम्नवर्ग के लोगों का जीवन अत्यन्त दयनीय रहता है। न उन्हें पेट भर खाना मिलता है, न शरीर ढंकने को पर्याप्त वस्त्र और न धूप वर्षा से बचने लायक कोई घर। नंगे-भूखे रहकर वे किसी टूटी-फूटी झोंपडी में या वृक्ष की छाया में अपना जीवन व्यतीत करते है। मानव शरीर धारण करने से मात्र उन्हें मानव की संज्ञा प्राप्त होती है अन्यथा उनका जीवन पशु-पक्षियों से भी गया बिता होता है। किसान, मजदूर तथा शारीरिक श्रम करनेवाले अन्य लोग इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। मध्य वर्ग की स्थिति निम्न वर्ग की अपेक्षा अच्छी होने पर भी पूर्णतया समाधानकारक नहीं मानी जा सकती। सुशिक्षित बेकारों की संख्या दिन-ब-दिन बढती जा रही है। परिवार में कमानेवाला एक और खाने वाले अनेक होने से मध्यवर्गीय लोग अभावों से पीडित रहते है। सुशिक्षित और सुसंस्कृत होने से उनकी अपनी आशा-आकांक्षाएँ रहती हैं। अपने अरमान, सपने और जीवन मूल्य रहते हैं। परंतु आर्थिक सुविधायें न होने के कारण इनकी आशाएँ पूरी नहीं हो सकती। अत: इन लोगों में घुटन, संत्रास, मानसिक विकृतियों का प्राबल्य अधिक होता है। उच्च वर्गीय लोगों के लिए धन का अभाव नहीं रहता। रहने के लिए बडी-बडी हवेलियाँ, पहनने के लिए मुलायम रेशमी वस्त्र और खाने के लिए मेवा मिठाई पर्याप्त परिणाम में उपलब्ध होती है। मोटर गाडी, नौकर-चाकर आदि की चमक अलग रहती है। इस वर्ग में राजामहाराजा या उनके समकक्ष अधिकारी, साहुकार, जमींदार, बडे-बडे व्यापारी और उद्योगपति जैसे लोगों का समावेश होता है। ये लोग निम्नवर्ग के लोगों के परिश्रम के बल पर लाखों रुपये कमाते हैं और ऐशोआराम की जिन्दगी व्यतीत करते रहते हैं। इन लोगों की धारणा होती है कि दुनियामें ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो धन से खरीदी नहीं जा सकती हो। धन के कारण वे घमंड में रहते हैं। निम्नवर्ग के प्रति इनका व्यवहार अत्यन्त कठोरता, निर्दयता तथा अवहेलना से परिपूर्ण रहता है। निम्नवर्ग के लोगोंका हर तरह से शोषण करने की प्रवृत्ति का प्राबल्य होने के कारण इनका अपना एक अलग शोषक वर्ग निर्माण हो गया है। शोषक वर्ग में शोषितों के प्रति न सहानुभूति होती है न शोषितों में शोषकों के प्रति आदर या श्रध्दा की भावना।

क) पारिवारिक समस्याएँ --

समाज में परिवार का अनन्य साधारण महत्व है। समाज का निर्माण ही परिवारों से होता है। इसीलिए दूसरे किसी समूह की अपेक्षा परिवार का प्रभाव सामाजिक जीवन पर किसी न किसी तरह पडता ही रहता है और वह दूरगामी होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे प्रकृतिने एकाकी नहीं बनाया। अपने जन्म, पालन-पोषण, सुरक्षा, शिक्षा और अन्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे दूसरों की सहायता और सहयोग पर निर्भर रहना पडता है। मनुष्य की कुछ आवश्यक शर्तें हैं, जैसे साँस लेना, खाना, पीना, घूमना, आदि। जिनके कारण वह संसार में जीवित रहता है। इसके अतिरिक्त काम भावना जैसी शर्तें मानव अकेला नही कर सकता। इस शर्त को पूरी करने के लिए पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष की जरुरत होती है। कामभाव का परिणाम सन्तानोत्पत्ति हो जाता है। इस प्रकार कामवासना की सन्तुष्टि के लिए स्त्री-पुरुष एक दूसरे के साथ मिल कर रहने लगे। इसलिए एक दूसरे और बच्चों के जीवन धारणाकी चिन्तासे परिवार का जन्म हुआ। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। जन्मलेने के बाद उस पर सबसे पहले प्रभाव परिवार के परिवेश का होता है।

मनुष्य के चरित्र गढ़न का कार्य बचपन से परिवार में होता है। मनुष्य के जीवन की बुनियाद परिवार में ही रची जाती है। माता-पिता तथा उसकी सन्तान इकठा रहने के कारण परिवार में कम से कम दो पीढियों के लोग रहते हैं। जिससे एक दूसरे के प्रति प्रेमासक्ति और वंशाभिमान की भावनाएँ पनपती हैं। इसके अन्तर्गत वैवाहिक और विवाहबाह्य संबंध, प्रेम, स्वार्थ, और स्वतंत्रता आदि का समावेश आता है। नारी को उपभोग्य वस्तु समझनेवाले पुरुषों के लिए पत्नी के मानसिक कष्टों का विचार महत्वपूर्ण नहीं था। आधुनिक युग में जब नारी अधिक जागृत, प्रभावशील और व्यक्तित्ववान बन चुकी है। पुरुष से वह उसी निष्ठा और सदाचरण की अपेक्षा करती है। जिसकी पुरुष नारी से करता है। एक पत्नी से अधिक स्त्रियों से संबंध रखने में पुरुष कभी अपने पौरुष

का गौरव अनुभव करता था । परंतु समानताके इस युग में विवेकशील और उत्तरदायी पुरुष भी पर स्त्री के आकर्षण को कमसे कम पत्नी की प्रवंचना मानता है और आत्मग्लानि भी अनुभव करता है ।

नारी और पुरुष के मानसिक प्रक्षोभ या खीझ के अतिरिक्त पर स्त्री की ओर आकर्षित पुरुष सामाजिकदृष्टि से भी अप्रतिष्ठा का भाजन बन जाता है । पुरुष की आत्मग्लानि,अपमानित पत्नी का प्रक्षोभ, परस्त्री का आकर्षण, सामाजिक प्रतिष्ठा पर आघात इत्यादी अनेक तनावों को निर्माण करने वाली यह समस्या है । स्त्री पुरुष के परस्पर आकर्षण के कारण विवाह से पूर्व एक-दूसरे को चाहना ही प्रेम कहा जाता है । धर्म,जाति-पाँति तथा धनका अभिमान आदि के संबंध में भारतीय समाज में रूढिवादिता बहुत बडे पैमाने पर आज भी दिखाई देती है । ऐसी अवस्था में धर्म,जाति-पाँति तथा वर्ग भिन्नता का विचार न करनेवाला प्रेम युवक युवतियों के जीवन में समस्या पैदा करता है । हर आदमी किसी न किसी पर प्रेम जरूर करता है । प्रेम के सिवा उसका जीवन ही अधूरा रहता है । स्वार्थ के कारण मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन जाता है । स्वार्थ के कारण हरएक व्यक्ति अन्धा होता जा रहा है । स्वार्थ के कारण वह किसी की जान तक लेने को तैयार हो जाता है । स्वार्थी व्यक्ति का एक न एक दिन अवश्य अन्त होगा । वह अपना भला बुरा जानकर भी स्वार्थ से परे नहीं हो जाता । स्वार्थ के कारण माँ-बाप भी अपनी सन्तान को नहीं छोड ते । वह उन्हें घर से बाहर नहीं भेजना चाहते । नयी और पुरानी पीढी में भी संघर्ष रहता है । और यही संघर्ष बहुत पुरानकाल से शुरु है और आगे भी शुरु रहेगा इसमें सन्देह नहीं है ।

ड) अन्य समस्याएँ --

राजनीतिका इतिहास के साथ बहुत घनिष्ट संबंध है क्योंकि राज्य ऐतिहासिक विकास का परिणाम है । राज्य की उन्नति,विकास और होनेवाले

परिवर्तनों का अध्ययन इतिहास द्वारा ही संभव है। भूतकाल की राजनीतिका नाम ही इतिहास है और वर्तमान इतिहास को ही राजनीति कहते हैं। राजनीति का अनुशीलन ऐतिहासिक दृष्टि से करना चाहिए और इतिहास की घटनाओं को भली भाँति समझने के लिए उनके राजनैतिक पहलू को विशेष महत्व देना चाहिए। बिना इतिहास के राजनीति नहीं और बिना राजनीति इतिहास नहीं। राजनीति में कुछ लोग देश की सेवा करते करते अपनी जान तक देने वाले होते है तो कुछ लोग दूसरों से सेवा करवाते-करवाते उसकी जान लेने वाले भी होते हैं। राजनीति में हर एक को समान अधिकार है परंतु वास्तविक चित्रण कुछ अलग ही दिखाई देता है। सरकार जनता के लिए कुछ न कुछ कार्य करती ही रहती है परंतु वह बीच में ही गायब हो जाता है। राज गद्दी के लिए अपना पुत्रन हो तो किसी दूसरे का पुत्र खरीद लेते हैं यही सिर्फ राजनीति में ही चलता है। कारण उसके पीछे स्वार्थ की भावना छिपी हुई है। उसे पूरी करने के लिए ऐसे काले धन्धे किया जाता है।

भ्रष्टाचार सभी जगह दिखाई देता है। सरकारी कारोबार में आज रिश्वतखोरी ने बहुत बडा उधम मचा रखा है। जिसका यह दुष्परिणाम नजर आ रहा है कि हर क्षेत्र में हमारा काम अच्छी तरह से नहीं चल रहा है। सामाजिक हित में उसके कारण बाधा निर्माण हो रही है। समाज मंदिर, शिक्षा केन्द्र, बस या रेल्वे स्टेशन, जलसिंचन के साधन, पानी की योजनाएँ तथा अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों इंजिनियरों से लेकर मंत्रियों तक इतनी रिश्वतखोरी बढ गयी है, कि प्रत्यक्ष काम पर कम खर्च और ज्यादा तर ऑफिसर और मंत्रियों की तिजोरी में ही बंद होता है। शैक्षणिक क्षेत्र एक पवित्र क्षेत्र माना जाता है, परंतु इस क्षेत्र में तो आज सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार दिखाई देता है। किसी भी छात्र के प्रवेश लेने के लिए रिश्वत देनी पडती है तथा उसको पढानेवाले जिसे हम ज्ञान के दाता कहते हैं, उन्हें भी अपने ज्ञान दान करने के लिए पहले रिश्वत देनी पडती है। रिश्वत लेकर भी नौकरी की ग्यॅारन्टी नहीं होती। ये अवस्थाएँ आज तो बहुत बढ चुकी है ताकि वह लौट न सके। कचहरी, पुलिस थाने और सरकारी दफ्तरों में आज कल

रिश्वतखोरी के अड्डे बन गए हैं। पैसे का वजन जब तक कागज पर रखा नहीं जाता तब तक कागज आगे की कार्यवाही के लिए नहीं जा सकता। रिश्वतखोरी ने इन सारे दफ्तरों को ग्रास लिया है। आज समाज में कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है जहाँ रिश्वत नहीं ली जाती। जन सामान्य को इस वृत्ति ने घायल और आहत किया है। समाज की यह एक बहुत गहन समस्या है।

उल्लिखित सभी समस्याओं का प्रतिबिंब विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में कहाँ तक झलकता है, इसका जिक्र आगे किया है, वह इस प्रकार है --

अ) सामाजिक समस्याएँ --

सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत समाज में जो दिखाई देता है उसका वर्णन आता है। इसमें बहुत-सी समस्याएँ होती हैं जिसको हल करने के लिए बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पडता है। मानव मानव के सम्बन्धों का चित्रण इन समस्याओं में किया जाता है। मानव में जो जाति,वंश और धर्म के आधारपर संघर्ष निर्माण होते हैं उनका भी स्पष्टीकरण इन समस्याओं में किया जाता है। मानव समाज के सहारे ही जीता है और उसका अन्त भी उसी में ही होता है। छोटा - बडा एक ही राह पर चलता है। विशिष्ट उम्र में शादी न होने के कारण अविवाहित स्त्री अथवा पुरुष में वासना के कारण अनैतिक आचरण होता है। परिवार में पुरानी और नयी पीढी में मत भिन्नता तथा वैचारिक विरोध निर्माण होता है। औद्योगीकरण तथा पाश्चात्य मूल्यों के प्रभाव के परिणाम स्वरुप आचार-विचार में आये हुए परिवर्तन पारिवारिक स्थिति को अस्थिर बनाते है और उससे सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं।

१) मानव मानव के संबंध --

सामाजिक परिस्थिति के अन्तर्गत मानव मानव के संबंधों का महत्वपूर्ण योगदान है। मानव मानव के बिना नहीं जी सकता। एक मानव दूसरे मानव को सुधारने की चेष्टा करता है। और यही कार्य हर एक को करना जरुरी है। सभी

मानवोंके मन में एक-दूसरे के बारे में प्रेम रहना चाहिए । तभी वह अपने को मानव कहने योग्य होता है अन्यथा नहीं । जो दूसरों के बारे में सोचता है वही सचा मानव है । ऐसे कुछ व्यक्ति समाज में होते हैं । जिनका अनुभव करके विष्णु प्रभाकर जी ने अपने साहित्य में अन्तर्भाव किया है । जैसे ` --

` रहमान का बेटा ` --

इस कहानी में रहमान का बेटा सलीम अपने परिवार की गन्दी स्थिति को बदलना चाहता है । सलीम अपने परिवार को अपनी गन्दगी के बारे में समझाता है । परिवार के साथ ही साथ अन्य लोगों को भी वह उस गन्दगी के बारे में समझाता है और परिवार के साथ समाज को भी सुधारने का प्रयत्न करता है । सलीम को अपने माँ-बाप और भाई,बहनों के साथ अन्य लोगों के बारेमें भी प्रेम है । परंतु अपनी स्थिति सुधारने के लिए वह घर छोडकर जाता है तभी उसके पास उसकी बहन भी उन्होंने जो कहा वह वही लडकी अपने माँ-बाप से कहती है," उन्होंने कहा बडे लोग हमें जान-बूझकर नीचे गिराते जाते हैं और हम बोले ही नहीं ।"[१] उसे अपने आप पर गुस्सा आता है और वह घर से चला जाता है इसमें निम्न - मध्यवर्गीय परिवार को चित्रित किया है । जिनको ऐसे प्रसंगोंका सामना करना पडता है ।

` नाग-फाँस `

एक स्वार्थी माता को चित्रित किया है । इसमें सामाजिकता के साथ मनोवैज्ञानिकता को स्पष्ट किया है । एक स्वार्थी माँ अपने स्वार्थ के लिए अपने प्यार को मिटा देना चाहती है । माँ का स्नेह पुत्र का काल बनता है यही इसमें दिखाई देता है । मानव को जीनेके लिए समाज की आवश्यकता है और इस सामाजिक बन्धनों में उसे जकडा जाता है और वही बन्धन उसके गले का फाँस बन जाता है । कुछ माँ-बाप अपने पुत्रों को काबू में रखते समय उसके स्वार्थ के बारे में न सोचकर वे अपने स्वार्थ के लिए उसका उपयोग करते हैं । ऐसी ही एक माता के दो बच्चे उन्हें छोडकर दिसावर गये हैं और जो छोटा है वही बीमार है । डाक्टर कोशिश

करते हैं परंतु उसका बुखार कम नहीं होता तब वे वहाँ रहकर जाच करते हैं । वे देखते हैं कि मैं बेटे के औषध खिलाने के बगैर बाहर फैंक देती है तभी डाक्टर उस बच्चे के पितासे कहते हैं" स्नेह नहीं,यह मनुष्य का स्वार्थ है, जो प्रतिक्षण मनुष्यता की हत्या करता रहता है ।"[2] उस मैं, को डर है कि अगर यह बेटा ठीक हो जायेगा तो वह भी अपने भाईयों की तरह घर छोड के चला जायेगा । इस स्वार्थ के कारण वह बेटा ठीक नहीं हो सकता ।

` ठेका `

इस कहानी में गिरते हुए नैतिक मूल्यों का अनूठा चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने किया है । सामाजिक प्रतिष्ठा मानव का अविभाज्य घटक है । वह उस प्रतिष्ठा से जुदा नहीं होना चाहता । और ऐसी प्रतिष्ठा को पाने के लिए उसे एक दूसरे के साथ व्यवहार करना पडता है । समाज में हर व्यक्ति अपने आपको बडे साबित करने का प्रयत्न करता है । सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए कुछ स्त्रियाँ अपने आपको समर्पित कर देती है । और प्रतिष्ठा पाती है । ऐसे ही एक औरत का इसमें चित्रण है । जो दूसरे का ठेका स्वंय प्राप्त करने के लिए अपने पति को पार्टी में अकेले छोडकर वर्मा के पास जाती है । पति अपनी पत्नी संतोष पार्टी पर न आने के कारण क्रोधित होकर घर आता है । तब वह ठेका प्राप्त करके घर आती है । वह उस पर तरसता है तब सन्तोष बोली," यही कि मैं वर्मा के साथ न रहती तो वह ठेका राजकिशोर को मिल जाता[3]।" ठेके के रुप में कुछ स्त्रियाँ उसे प्राप्त करने के लिए अपना निलाम कर देती है । और कुछ लोग इसमें ही अपनी प्रतिष्ठा ,मान - सम्मान मानते हैं ।

` कितना झूठ `

इस कहानी में पुत्र प्राप्ति के बारेमें किन-किन समस्याओं से जूझाना पडता है इसका चित्रण है । आधुनिक समाज में भी लडका और लडकी इनको समान स्थान नहीं दिखाई देता । पुत्र को अपने कुल का दीपक मानने की प्रथा बहुत पुरानी है जो आज इस आधुनिक युग में भी दिखाई देती है । पुत्र को पाने के लिए लोग कुछ भी

करते हैं। इस कहानी में दिखाया है कि पति निशिकांत और पत्नी सत्यभामा एक सुखी दाम्पत्य है। परंतु उनको इन समस्याओं में उलझाना पडता है। सत्यभामा को पुत्र होता है परंतु वह बच नहीं सकता तब निशिकांत के सामने पत्नी को बचाना एक मात्र उद्देश्य रहा है और इसीलिए वह झूठ बोलता है। वह अपने आपको कहता है' सत्यभामा को बचाने के लिए मेरे अन्दर इतनी तीव्र लालसा क्यों... क्यों मैं उसे मरने नहीं देना चाहता ... क्यों मैं ... ?'[४] इस कहानी में पति-पत्नी का प्रेम और बच्चे की लालसा इनका मिलन दिखाया है। यह कहानी स्वयं विष्णुजी के जीवन का एक पृष्ठ है।

'आश्रिता'

इस कहानी में एक विधवा सोना का चित्रण है। समाज विधवा की तरफ बुरी नजरोंसे देखता है। सोना एक सुन्दरी है पर वह विधवा है। वह अपने पिता के घर रहती है जहाँ मास्टर अजीत से उनका परिचय उनका भाई किशुन के कारण हो जाता है। अजीत सोना को सहारा देते हैं। वह उनसे विवाह करना चाहते हैं। यह देखकर सोना एक वकिल के लडके से विवाह करती है। परंतु उनसे उसे एक बच्ची प्राप्त होने के बाद उसके पतिकी मृत्यु होती है। तब उसके सामने अजीत के सिवा और कोई सहारा नहींदिखाई देता। वह अजीत के पास फिर आती है तब वे उन्हें पूछते हैं, उसदिन तुम क्यों चली गई थी ? सोनाने कहा,' आप चाहते हैं तो कहूँगी। मैं जान गई थी,आप भी मुझे अपनी बनाना चाहते थे। जानकर मैं दु:खी हुई,पर सोचा,पुरुष होकर तुम अपने उस स्वभाव को कैसे भूलते ? स्वभाव की प्रबलता मुझ पर उसी दिन प्रकट हुई। आप चाहते थे मैं आपकी होती,यह अच्छा ही था। पर मास्टर साहब। जिसके आश्रम के आवरण के नीचे आकर मैंने अनाथ की भाँति लाड-दुलार पाया,जिसकी ओर देखकर मैंने अपने हृदय को ममता से उमडते देखा उसीके ... ओह। उसीके सामने अपना आवरण कैसे हटाती ? और फिर मैं.... ।'[५] सोना अपने और मास्टर के बीच जो संबंध है उसे जतानेके लिए किसी दूसरे के साथ शादी करती है।

' नई ज्यामिति '

इस कहानी में एक अनाथ लड़की का चित्रण है। नयनतारा एक अनाथ लड़की है। उसका परिचय शरण से हो जाता है तब वह उसके बारेमें त्रिलोकीनाथ से बातचीत करता है। त्रिलोकीनाथ सेठ है और वे दूसरों की मदद करने का भी काम करते हैं। वे एकदिन नयनतारा के घर आते हैं तब उन्हें उसका बर्ताव ठीक नहीं लगता। वे बोले मैंने अपनी पत्नी और लड़की से तुम्हारे बारे में सलाह ली थी तब पत्नी बोली, " तुम्हारे पास तो पैसा है,क्यों नहीं उस लड़की की पढाई का प्रबन्ध कर देते।"[६] इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया था। नयनतारा क्रोधित होती है और वे वहाँ से चले जाते हैं। त्रिलोकीनाथ अनाथोंको सहारा देना चाहते हैं परंतु वे उसका अर्थ कुछ गलत समझते हैं।

' तूफान '

इस कहानी में सामाजिक अन्धविश्वासों का चित्रण है। अन्धविश्वासों के कारण मनुष्य अपने आपको दोष देता रहता है। उसके मन में हर समय द्वन्द्व रहता है। यात्रा में तूफान आने का भयदिखाकर दूकानदार अपना माल बेचते हैं। इस तूफान में एक वृध्दा और युवती फँस जाते हैं। वृध्दा कहीं भी रहने को तैयार है परंतु युवती रश्मि नहीं। जिस कमरे में वह जाती है उसमें एक बीमार आदमी है उसे देखकर रश्मि दूर चली जाती है परंतु बारीश आने के कारण वापस आती है। तब गोपाल क्रोधित होकर उसे कहता है,तुम फिर यहाँ क्यों आई। रश्मि बोली, " बडी अभागिन हूँ। माँ ने प्रसूति में ही आँखें मूँद ली। भरी जवानी में पति साथ छोड गया। एक बेटा था जो बारह वर्ष का होते न होते चला गया। बाप के घर लौटी तो देहरी पर पाँव रखते ही उसने स्वर्ग का रास्ता पकडा। जहाँ जाती हूँ, सर्वनाश साथ जाता है। जिसे प्यार करती हूँ वही मिट जाता है। मेरी छाया में मौत का वास है...."[७] ऐसे अन्धविश्वास समाज में आज भी बहुत से दिखाई देते हैं जिसके कारण मनुष्य अपने प्रयत्नों से दूर रहता है और अपने आप को दोष देता है।

२) जाति धर्म, वंश के आधार पर पनपनेवाले संघर्ष --

जाति,धर्म और वंश के आधार पर अनेक संघर्ष निर्माण होते है। वास्तविक रूप में सभी मानव एक ही हैं फिर भी उनमें भेद किए हैं। इस दुनिया में केवल दो ही व्यक्ति हैं उनमें पुरुष और नारी। मनुष्यने ही अपने आपमें भेद करके जाति,धर्म और वंश को निर्माण किया है। जिसके कारण आज लोगों में संघर्ष दिखाई देता है। ऐसे ही कुछ संघर्षों को विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

` अधूरी कहानी `

इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम समस्या का चित्रण है। ईद के दिन हिंदू लोग मुसलमानों को दूध देते हैं। परंतु उनके हाथ का बना हुआ खाना नहीं खाते। इसका स्वयं लेखकने अनुभव किया है। अहमद अपने मित्र दिलीप के घर से दूध लाता है,और वह उसी मुहब्बत में उन्हें सेवैयाँ देने के लिए जाता है। तब दिलीप का भाई अहमद को कहता है" हम हिन्दू हैं और हिन्दू लोग तुम्हारे हाथ का छुआ खाना पाप समझते हैं।"[८] इस बात को सुनकर अहमद के दिलपर चोट लगी और वह गिर पडा। शायद यह कहानी आगे भी होगी ऐसा लेखक कहते हैं। पर उनके लिए वह अधूरी कहानी ही दिल का दर्द बन बैठी है।

` मेरा बेटा `

यह कहानी भी अधूरी कहानी की तरह हिन्दू - मुस्लिम समस्याओं पर आधारित है। इस कहानी में एक पिता-पुत्र के बीच धर्म की दीवार खडी है यह स्पष्ट किया है। पिता मुसलमान है और पुत्र हिन्दू। बाप बेटे से प्यार करता है जैसे वह अपने अन्य बेटेसे करता हैं। हिन्दू मुस्लिम दंगे में रामप्रसाद जख्मी हो गया है यहीं सुनकर पिता अपने दूसरे बेटे हसन से बोले," मैं होश में हूँ,मेरे बच्चे मैं उसके पास जाऊँगा, आखिर वह मेरा बेटा है,कोई गैर नहीं मैं मुसलमान हूँ और वह हिन्दू, वह मुझसे मेरे बच्चों से नफरत करता है, पर ... पर वह भी मेरा बच्चा है। मैं उससे नफरत नहीं करता हसन ... हसन ...।"[९] धर्म के कारण बेटा अपने पिता को पिता मानने को तैयार नहीं है परंतु पिता अपने बेटे को बेटा मानते हैं।

एक पुरानी कहानी

इसमें भी हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं को स्पष्ट किया है। डाक्टर योगेश हिन्दु है और अनवर पठान है। अनवर का बच्चा बीमार है इसीलिए वह डाक्टर योगेश को बुलाने को आते हैं। परंतु डाक्टर उसके घर पर जाने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि हिन्दू और पठानों में संघर्ष है। परंतु डाक्टर योगेश को एक पुरानी कहानी याद आती है। जब वे कालेज में पढते थे तभी तॉगे से जा रहे थे तब बीच में एक बालक और बालिका को अपने तॉगे में लेते हैं। वह बच्चे पठानों की गली में रहते थे। पठानों की गली आने पर वह बच्चे वहॉ उतरते है तभी योगेश बोला," मैं छोड आऊँ। बालिकाने उसकी ओर देखा मुस्कराई, शुक्रिया माई जान,हम तो रोज ही आते हैं।"[१०] और वे बच्चे चले गये। डाक्टर योगेश की उसके बाद उस बालिका की भेट आजतक नहीं हुई। वह सोचते हैं कि शायद उसका बच्चा होगा इसी विचार से वे वहॉ चले जाते हैं। इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं के साथ ही मानवतावादी भाव का सुन्दर चित्रण हुआ है। अपने कर्तव्य की पूर्ति करनेवाले डाक्टर योगेश जैसे व्यक्ति आधुनिक युग में मिलना बहुत कठीन है।

एक और कुन्ती

इस कहानी में धर्म के आधार पर निर्माण होनेवाले संघर्ष का चित्रण है। प्रतिमा के जीवन में घटी हुई यह कहानी उसने एक पत्र द्वारा लिखी है। मैं एक सुसंस्कृत परिवार की बेटी और सम्पन्न घराने की बहू थी। अचानक एक दिन हमारे घर पर आक्रमण हुआ और उसमें मेरे पति को मारकर बलात्कार किया मेरे साथ। इसी का नतीजा यह हुआ कि मुझे हर समय एक नये मर्द के पास जाना पडा क्योंकि मैं नारी थी और सुन्दर। इस आक्रमण में बहुतसे लोगों को मार डाला। मुझे हर एक मर्द से सामना करके पॉच बेटों की मॉ बनना पडा। हर समय नियति ने मुझसे छल किया।

ड) अवस्थाओं के आधार पर निर्माण होनेवाले संघर्ष --

मानव को तीन अवस्थाओं से गुजरना पडता है। उसी तरह इस भूमि पर रहनेवाले सभी जीवों को भी तीन अवस्थाओं से सामना करना पडता है। उसमें बाल अवस्था, युवावस्था और वृध्दावस्था है। इन अवस्थाओं से सभी को जाना पडता है। ऐसे ही कुछ अवस्थाओं का चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में किया है।

१) युवावस्था --

युवावस्था में बहुत संभाल के रहना पडता है। मनुष्य के जीवन में जो परिवर्तन होता है वही इसी अवस्था में होता है। अगर वह इस अवस्था में सोच-समझकर काम ले तो जीवन में सफल हो सकता है अन्यथा नहीं। जवानी में जो मनुष्य भूल करता है उसे उसका परिणाम जरूर भुगतना पडता है। इस संदर्भ में हिन्दी साहित्य के एक महान साहित्यकार डा. हरिवंशराय बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा `क्या भूलूँ क्या याद करूँ` में लिखा है, "मनुष्य प्राया: अपने जवानी में कोई ऐसी भूल कर जाता है कि उससे उसकी जिंदगी का सारा नक्शा ही बदल जाता है।" बच्चन जी का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने जवानी की भूल के बारे में सही अर्थ बताया है। जवानी कुछ दिनों की होती है। युवावस्था में सोच समझकर निर्णय लेना ही योग्य है अन्यथा इसका परिणाम बुढापे तक सहना पडता है।

`भटकन और भटकन` --

इस कहानी में युवावस्था का चित्रण है। सांत्वना एक विधवा स्त्री है। सर्वजीत उसे चाहता है। सांत्वना के शरीर की प्यास अभी तक शेष है। परंतु वह अपने बच्चोंको और समाज को धोखा नहीं देना चाहती। उसकी स्थिति ऐसी होती है कि वह उससे इनकार भी नहीं करती और सहज भाव से स्वीकार भी नहीं कर सकती। वे दोनों गाडी के कूपे में थे। सर्वजीत उसे बोला कि एक बार तो जी

में आया था कि उतरकर तुम्हारे शरीर को झंझोड डालूँ। तब वह कहती है, " तुममें और उस पुलिस इन्स्पेक्टर में अन्तर ही क्या है, जिसने सवेरे-सवेरे दूध लेने जाती हुई एक औरत के साथ बलात्कार किया था ... जब दो शरीर सैकडों मिलों की मानसिक दूरी के साथ मिलते हैं तो उस अर्थहीन मिलन में न सौन्दर्य होता है और न सत्य। वह न तन को बाँध पाता है, न मन को। इसीको कहते हैं अपवित्र होना, यही अश्लीलता है।"[११] ऐसे ही कुछ प्रसंगों के कारण युवावस्था में संघर्ष निर्माण होते हैं।

२) वृध्दावस्था --

वृध्दावस्था मनुष्य के जीवन का अंतिम क्षण होता है। इस अवस्था में उसे कब इस दुनिया से जाना पडेगा इसका कोई भरोसा नहीं है। वृध्दावस्था में उसको किसी दूसरे के सहारे की अवश्यकता होती है। अगर वह उसे नहीं मिल सकती तो उसका यह काल बहुत बुरा काल है। इस अवस्थामें मनुष्य के अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं। ऐसी ही एक अवस्था का लेखक ने अपनी कहानियों में वर्णन किया है।

` अंधेरे आंगन वाला मकान `

इस कहानी में दो वृध्द पति-पत्नी का चित्रण है। बहुत बडे मकान में ये दो वृध्द आदमी रहते हैं। उनके बेटे और बेटियाँ नौकरी के लिए बाहर जा बसे हैं। बेटियों का तो ठीक ही है, परंतु बेटे भी मेहमान की तरह दो दिन घर आते हैं और चले जाते हैं। घर में बहुत चीजें हैं। लेकिन इन चीजों के अलावा उनको प्यार और सहारे की अवश्यकता है जो उन्हें नहीं मिल पाता। माँ-बाप अपनी सन्तान पर बच्चपन में प्यार करते हैं ताकि वह प्यार उन्हें बुढापे में मिल जाए। वृध्दावस्थाओं में धन-सम्पदा से बढ कर प्रेम महत्वपूर्ण है। उनकी बेटी मंजुला की सहेली दीप्ति और उनके पति माधव उनके घर पर आते हैं परंतु मंजुला वहाँ नहीं है। उस पति-पत्नी के घर पर आनेसे उस वृध्दा को बहुत आनंद होता है। दीप्ति को मंजुला न होने के कारण माँ को बेवक्त कष्ट देना अच्छा नहीं लगता पर माँ नहीं मानती वह कहती है," बेवक्त कैसा, बेटी। आनेवाला जब भी आता है,

वक्त पर आता है। पर यहाँ आता ही कौन है हमारे पास ? भगवान के भेजे तुम लोग आए, इससे अच्छा वक्त हमारे लिए क्या होगा।" [१२]

४) आधुनिक स्त्री तथा विदेशियों का अन्धानुकरण --

आज समाज में स्त्री और पुरुष समान साझीदार हैं। हमारे कानून ने स्त्री और पुरुष को समानता दी है। परंतु समाज में आज भी कहीं जगह यह समानता नहीं दिखाई देती। हमारी भारतीय संस्कृति में पुरुषों ने अपना स्थान प्रमुख करके स्त्रियों को गौण स्थान दिया है। उन्होंने उन्हें घर से बाहर ही नहीं आने दिया था। पर आज वही स्त्रियाँ पढ-लिखकर घरसे बाहर आई है और जो उसे कानून ने स्वतंत्रता दी है उसका उपभोग वह लेने लगी है। आधुनिक स्त्री स्वतंत्र है वह अपने बारे में सोच समझकर निर्णय ले सकती है। स्वतंत्रता के कारण ही आज समाज में और देश में ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर स्त्रियाँ विराजमान हैं। पुरुष और स्त्री समान हैं। परंतु कुछ स्त्रियाँ ऐसी हैं कि वह अपने आप को जैसा चाहिए वैसा आचरण करती हैं। वह आज धन और प्रसिध्दी के पीछे भाग रही हैं और उसे लगता है कि इसमें ही सर्वस्व है। इस सर्वस्व को प्राप्त करने में कई बार उसका अन्त भी हो चुका है और हो रहा है। ऐसी ही कुछ स्त्रियोंका चित्रण विष्णु-प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में किया है।

` एक मौत समन्दर किनारे --

इस कहानी की नायिका एक आधुनिक स्वतंत्रतावादी स्त्री है। नायिका जाबाला निर्भीक और साहसी लडकी है,इतनी कि उसे आवारा और बदचलन भी कहा जा सकता है। वह शराब पीती है और अपनी इच्छासे किसी के भी साथ घूम सकती है। उसमें एक ऐसी हविस है कि जो सब कुछ को अपने में समेट लेना चाहती है,सब कुछ लेने के लिए और सब कुछ देने के लिए। किसीके अहम से टकरा जाना और किसी के लिए अपने को लुटा देना दोनों का उसके लिए एक ही अर्थ है। वह मुक्त जीवन जीना चाहती है, पर शायद कहीं कुछ ऐसा है जिसकी

तलाश में वह निरन्तर बेचैन रहती है। ऐसी स्त्रियाँ आज आधुनिक समाज में भी कुछ दिखाई देती हैं। जाबाला सेठ बाजोरिया की निजी सचिव है। वह अपने मित्र शैलेन्द्र से उनके बारे में कहती है," वह युवक है। सुन्दर है। प्रतिभाशाली है और मन की बात कहूँ दादा, मैं समृध्दि को भोग देखना चाहती हूँ। भोग रही हूँ, इतना कि समेट नहीं पाती।" [१३]

`ढोलक पर थाप`

इस कहानी में एक आधुनिक विदेशियोंका अन्धानुकरण करनेवाली स्त्री का चित्रण किया है। मिसेज चावला ने अपने घर पर बहुत सी विदेशी चीज खरीदकर लाई हैं। उन्होंने अपने घर पर एक पार्टी का आयोजन किया है। पार्टी में पुरुष और स्त्रियाँ शराब पीती हैं और ढोलक के गीत पर नाचती हैं। उँचे कुल में यह आज प्रतिष्ठा बनी है। आधुनिक स्त्री आज सबसे उँचे स्थान पर जाने के लिए प्रयत्न करती है। कुछ आधुनिक स्त्रियाँ मान मर्यादाओं का खयाल नहीं रखती। मिसेज चावला की पार्टी में सभी लोग शराब पी रहे हैं परंतु मिसेज थापर न पीने के कारण मिस्टर गुप्ता ने उसकी ओर गिलास बढाया, पर वह पीछे हटी परंतु मिस्टर गुप्ता उनके साथ चलकर बोले," आज तो आपको पीनी ही होंगी। यह स्कॉच नहीं, शेरी है, औरतो की मीठी शराब।" [१४] इस प्रकार का आचरण उँचे कुल में प्रतिष्ठा के नाम पर कुछ लोग करते रहते हैं। पाश्चात्यों की प्रशंसा करके उनका अनुकरण करणे की चेष्टा करते रहते हैं।

५) सामाजिक नैतिकता --

`रहमान का बेटा`

इस कहानी में सामाजिक नैतिकता को दिखाते समय बडे लोगों के बारे में लिखा है" औरतें ऐसी गिर गई हैं कि पराए मरद कमर में हाथ डालकर लिए फिरते हैं और वे हँस-हँसकर खिलर-खिलर बातें करे हैं।" [१५] कुलो में आज भी ऐसी स्थिति दिखाई देतो है। आज हर एक अपने आप को आजाद समझा कर जैसा चाहिए वैसा आचरण करने लगे है। यही इस कहानी में दिखाई देता है।

` ठेका ` --

इस कहानी में भी नैतिकता का चित्रण है । समाज में हर एक अपने आपको उँचा साबित करने के लिए कुछ भी करते हैं । श्यामा ने जो ठेका प्राप्त किया था उसको पाने के लिए सन्तोष उसके साथ रहकर उसे अपना करके वही ठेका प्राप्त करती है । प्रत्येक व्यक्ति अपने से दूसरों को नीचा गिराने की कोशिश करता है । उसमें चाहे अपनी बीवी बच्चे भी क्यों न हो । रोशन अपनी पत्नी सन्तोष पर क्रोधित होता है क्योंकि वह पार्टी में न आने के कारण परंतु वह ठेका मिल गया है यही अपने पति से कहने के बाद वह बहुत खुश होता है और कहता है" सन्तोष तुम कितनी अच्छी हो,कितनी बडी हो । ओह मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ ... ? क्या करूँ.... ? पत्नी सन्तोष बोली,` कुछ नहीं डार्लिंग, मैं पिक्चर जा रही हूँ। मेरा इन्तजार न करना । सो जाना ।" [१६]

` समझौता ` --

इस कहानी में भी उँचो कुल और प्रतिष्ठा का चित्रण किया है । अपने स्वार्थ के लिए अपनी पत्नी का व्यापार करनेवाले लोग आज भी दिखाई देते हैं । एक वेश्या की बेटी कुल-सम्पदा के कारण एक कुलीन बहू बनती हैपरआखिर वह उसी के " बुरा-भला सदा सापेक्ष होता है,पाप-पुण्य भी । जीने के लिए पाप करना बुरा नहीं है, पर उसे छिपकर करना चाहिये । आखिर जीना ही तो उद्दाम जीवन का लक्ष्य है और हम दोनों जीना चाहते हैं ।" [१७]

` तिरछी पगडंडियाँ `

इस कहानी में एक अनाथ लडकी शतरुपा का चित्रण है । शतरुपा एक सुन्दरी है और उसके सौन्दर्य पर किशोर मोहित था । वह` अभिनंदन-ग्रंथ ` का निर्माण शतरुपा के कारण ही करता है । वे दोनों कश्मीर चले जाते हैं तब वहाँ सुशील दिखाई देता है । शतरुपा उस को चाहती है इसीलिए वह एक दिन उसको अकेली मिलने के लिए आती है । वहाँ किशोर आता है और कहता है," आप और

शतरुपा मिल जाएँ तो इस अभागे देश के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं । "
शतरुपा किशोर जाने के बाद कहती है," मैं क्या करूँ ? तुम मुझपर अधिकार क्यों नहीं जताते ? मुझे खींच क्यों नहीं लेते ? तुमने देखा, वहमुझे बुलाने आया था और दो मिनट बाद फिर वह लौट कर आयेगा । लेकिन मैं जाना नहीं चाहती ।"[१८]

ब) आर्थिक समस्याएँ --

आर्थिक समस्या मानव के जीवन में महत्वपूर्ण है । आर्थिक समस्या के कारण मनुष्य अपनी प्रगति नहीं कर सकता । मानव को जीने के लिए दो वक्त की रोटी की आवश्यकता होती है । और इसे मिटाने के लिए पैसे की जरुरत है । आधुनिक युग में मनुष्य को जीना ही मुश्किल हो गया है । वह दिन रात मेहनतकरके भी पेट भर नहीं खा सकता परंतु कुछ लोग काले धन्दे करके रुपये कमाते हैं और चैन से जीते हैं । आर्थिक स्थिति के कारण ही आज सभी ओर अशांति दिखाई देती है । दिन - प्रतिदिन जीवन उपयोगी चीजों की कीमत बढती जा रही है परंतु आमदनी उसी तरह बढती नहीं । इन सभी का जीवन में सामना करना पडता है । इस संघर्ष के अलावा वह जी भी नहीं सकता । अपने परिवार के साथ रहते समय मनुष्य को किस तरह आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए संघर्ष करना पडता है इसका चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कुछ कहानियों में किया है ।

` धरती अब भी घूम रही है " इस कहानी में आर्थिक समस्याओं के कारण रिश्वत लेने से उसका असर क्या होता है इसका चित्रण किया है । बीस रुपयों की रिश्वत लेनेवाला भ्रष्टाचारी होता है, पर पाँच सौ रुपयों की रिश्वत लेनेवाला भ्रष्टाचारी साबित नहीं होता । नीना और कमल इन दो बच्चों के पिता ने आमदनी कम और खर्चा जादा होने के कारण रिश्वत ली थी । इसीलिए उन्हें हवालात में जाना पडा । तब वे दोनों बच्चों के वक्तव्य के कारण सभी को आचरज होता है । उनकी जज के साथ जो बातें होती हैं वहीं बातों को सुनकर ऐसा लगता है कि धरती अब भी घूम रही है । रिश्वत के बारे में नीना को पडोसिन कहती है," उसका खर्च बहुत था और आमदनी कम । वह बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना

चाहता था और तुम जानो अच्छी शिक्षा बहुत महंगी है ....'[१९] इसी कारण उन्होंने रिश्वत ली थी और उसका परिणाम उसे भुगतना पडा था ।

` रहमान का बेटा ` -- इस कहानी में आर्थिक समस्या दिखाते समय लेखक ने जो पंजाब में स्वयं अनुभव किया है वहीं यही कहानी बनी है । रहमान का बेटा सलीम,अपनी आर्थिक समस्या के साथ ही अपने परिवार की गन्दगी को सुधारना चाहता है और वह इसीलिए घर छोडकर जाना चाहता है । वह अपने साथ अपने परिवार और समाज को भी सुधारना चाहता है । वह अपने परिवार की गन्दगी को देखकर कहता है,' हम इन्सान नहीं है ,हैवान है । जैसे नाली में कीडे बिलबिलावे है न, उसी तरह की हमारी जिन्दगी है ।'[२०]

` गृहस्थी ` -- इस कहानी में आर्थिक समस्याओं का चित्रण करते समय एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है । हेमेन्द्र कुछ भी कमाते नहीं फिर भी अपने मित्रों को घर बुलाकर भोजन देते हैं । इस भोजन का प्रबन्ध उनकी पत्नी वीणा को करना पडता है । घर गृहस्थी के नाते जो कुछ करना चाहिएँ वहीं सब वीणा को ही करना पडता है । इतना सब कुछ करने के बाद भी वीणा और हेमेन्द्र में प्रेम का भाव गहरा रहता है । हेमेन्द्र मित्र घर आने पर बेटे अतुल से कहते है कि अम्मासे कह दे कि खाना पाँच आदमियों के लिए बनाना । वह जब माँ को यह कहता है तब वह बोली,' कह दे जाकर,यहाँ होटल नहीं खुला है और न कोई सदाव्रत लगा है । क्या समझा लिया है मुझे ? कह दिया पाँच आदमी खाना खाएँगे । जैसे घर में कामधेनु बंधी हुई है । वाह्जी वाह । कुछ करना न धरना । दिन-भर तख्त पर पडे हुए हुक्म चलाए जाते हैं । करना पडे तो पता लगे । भला कोई बात है, पाँच को क्या मैं अपना सिर खिलाऊँगी । जरा बुलाकर तो ला ।'[२१] आर्थिक परिस्थितिके कारण उनकी यह अवस्था हो गई है ।

` साँचे और कला ` -- इस कहानी में अर्थ प्राप्ति के लिए खिलौने बनाये जाते हैं यह स्पष्ट किया है । कुम्हार के परिवार में सभी लोग खिलौने बनाते है और बीकते हैं । आज सब कुछ व्यापार होकर सभी का लक्ष्य बस पैसा और पेट हो गया है,यही बात बिरजूने लेखक से कही थी ,' पर व्यापार क्यों किया जाए,यह बात मेरी समझ में नही आती है और आज देखो भैया,सत्य-धरम,ईमान - वचन,

रूप जवानी, साइन्स-कला इन सब का व्यापार होता है ।"[२२] यह बात स्वयं लेखक ने सुनकर इस कहानी का निर्माण किया है ।

` पूल टूटने से पहले ` इस कहानी में मध्य वर्गीय परिवार की आर्थिक समस्याओं को स्पष्ट किया है । निम्न मध्यवर्गीय लोगों को दो वक्त की रोटी भी भर पेट नहीं मिलती परंतु वे अपने आबरूका बडा खयाल रखते है । लेखक अपने मित्रसे कहते हैं कि देखिए न,अभी मैंने आपसे सफेद झूठ बोला । कहा कि मैं बीच-बीच में कुछ दिन के लिए दूसरे रेस्तरां में जाता रहता हूँ । सच यह है कि," उन दिनों मैं घर से निकलता ही नहीं । जेब में पैसे ही नहीं होते । पत्नी हर माह मुझे एक निश्चित रकम देती है । कभी कभी वह जल्दी खर्च हो जाती है । तब शेष दिन मैं घर बैठ कर लिखने पढने में गुजर देता हूँ ।"[२३] आर्थिक समस्याओं के कारण मनुष्य को कुछ समय झूठा भी बोलना पडता है ।

` एक मैल समन्दर किनारे ` -- इस कहानी में धन को प्राप्त करने के लिए नये-नये मार्ग की खोज की जाती है यह स्पष्ट किया है । जिसके पास धन है उसके पास सब कुछ है । आज भी समाज में धनी लोग अपना रोब दूसरों पर जमाते है । जिसके पास धन नहीं है उसे आज जीना भी मुश्किल हो गया है । एक धनी व्यक्ति का चित्रण इस कहानी में किया है । जाबाला एक सुन्दरी और युवती है । वह बाजोरिया की सचिव है । उसके बारे में बाजोरिया कहते है," कितने दु:ख की बात है कि आज भी समाज में पैसे का महत्व है, लेकिन मैं उसे खींच कर उसके स्थान पर ले आना चाहता हूँ । इसीलिए मैंने जाबाला जैसी प्रतिमा को अपना साथी बनाया है । एक दिन मेरा इण्टरव्यू लेने आयी थी "[२४] आज भी वह उसकी रचिव है क्योंकि धन और सम्पदा के कारण ।

` चन्द्र लोक की यात्रा ` -- इस कहानी मेंएक मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है । उपेन्द्र एक लेखक है ? उनकी पत्नी त्योहार के समय रुपये माँगती है और बेटे भी पैसे माँगते हैं , तब वह अपनी पत्नी से कहते है," कोशिश करूँगा कि एक टकसाल खोल सकूँ ।"[२५] इस व्यंग्य को सभी समझाते हैं ।बेटा इंजिनियरिंग में पढता है उसे सौ रुपयों की आवश्यकता है, वह उसे नहीं मिलते । आर्थिक अवस्था

के कारण मनुष्य को जीना असह्य होता है। इस समस्या का परिणाम पूरे परिवार पर होता है।

`भूख और कुलीनता` -- इस कहानी में आर्थिक समस्या का चित्रण किया है। बंगाल के घर घर की यह अवस्था हो गयी है। उन्हें खाने को अनाज नहीं मिल रहा था। एक मारवाडी सेठ के गुमाश्ते जनगणना करने आये थे। वह दयालु सेठ चाहते थे कि मध्य वर्ग के कुछ गरीब लोग जो लोक-लाज के कारण हाथ नहीं फैला सकते, उन्हें सहायता करें। सुबोध बाबू से जब वह गुमाश्ते पूछते है तब वे क्रोधित होते है और क्रुध्द कंपित स्वर में बोले " यह ढोंग यहाँ नहीं चलेगा। अपने सेठ से जाकर कहो कि मदद करनी है तो सडक पर लाखों भूखे-नंगे तडप - तडपकर प्राण दे रहे है....[२६] भूख के कारण आदमी अपने पास जो भी है उसे बेच कर पेट भरता है। एक औरत तो अपने बच्चे के ही बेचती है।

क) पारिवारिक समस्याएँ --

सामाजिक, आर्थिक के साथ ही पारिवारिक समस्या जुडी है। मानव परिवार के सिवा नहीं रह सकता। हर एक को दूसरे की आवश्यकता है। परिवार के बिना मानव जी ही नहीं सकता। उसे समाज के साथ अपना परिवार महत्व का है। ऐसेही कुछ परिवारोंको लेखक विष्णु प्रभाकर जी ने अपने साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने जो दिखाई देता है उसका सही रुप से अंकन अपने साहित्य में किया है। पारिवारिक समस्याओंके अन्तर्गत वैवाहिक सम्बन्ध और विवाहबाह्य सम्बन्ध, स्वार्थ के लिए संघर्ष, मानव मानव के बीच सम्बन्ध आदि का चित्रण होता है।

१) वैवाहिक सम्बन्ध और विवाहबाह्य सम्बन्ध --

विवाह मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण होता है। विवाह बे बीना उसे जीना मुश्किल है। लोग लज्जा के कारण तो शादी करनी ही पडती है। इसी बन्धन में आमतौर पर लोगों को बन्धना पडता है। विवाह मानव के जीवन का एक अविभाज्य घटक है। विवाह बाह्य संबंध मानव की जिंदगी को नष्ट करता है।

विवाहबाह्य संबंध रखना यह हमारी संस्कृति और कानून के अनुसार गलत है। यह मालूम होने के बाद भी कुछ लोग ऐसे संबंध रखते हैं और अपने सुखी जीवन को दु:खी बना देते हैं। यही समस्या आधुनिक ही नहीं है तो यह समस्याएँ प्राचीन कालों से चली आई हैं। जिसकी जानकारी साहित्य के द्वारा हो जाती है। ऐसीही कुछ समस्याओं को लेकर विष्णु प्रभाकर जी ने कुछ कहानियाँ लिखी हैं।

`सम्बल` -- इस कहानी में पति-पत्नी के वैवाहिक प्रेम का चित्रण है। पत्नी हर समय अपने पति के साथ रहती है। पति शराबी होने पर भी वह उन्हें संभालती है। वे नशे में अन्य लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण पत्नी उन लोगों को स्वयं क्षमा माँगती है। सिंह की पत्नी उनपर बेहद प्यार करती है और इसी कारण ही वे बहुत शराब पीते हैं। इस कहानी को लेखक ने उनके मित्र के द्वारा सुनकर लिखा है। वे सिंह की पत्नी के बारे में सिंह के जो विचार है वही इस प्रकार है,` स्वयं सिंह ने मुझसे कई बार कहा है - मैं शराब छोडना चाहता हूँ।` फिर ?`` पर नहीं छोड पाता।` क्यों ? वे कहते हैं क्योंकि यदि उसने शराब पीनी छोड दी,तो उसकी पत्नी उससे प्रेम करना छोड देगी।`[२७]

`अभाव` -- इस कहानी में वैवाहिक प्रेम के साथ अपने पडोसियों पर भी प्यार करनेवाले एक दाम्पत्य का चित्रण है। एक सुन्दर गृहिणी अपनी गोद खाली रहने के कारण अपने पडोसियों के बेबी पर बहुत प्यार करती है। परंतु यह उस बेबी के पिता प्रोफेसर वर्मा को अच्छा नहीं लगता वे पति-पत्नी बच्चे न होने के कारण दु:खी नहीं है। वे एक दूसरे पर बहुत प्यार करते हैं। उस सुन्दरी के जीवन में जो बच्चों का अभाव निर्माण हुआ है वह नहीं मिटता। वह उस अभाव के कारण ही उस बेबी से प्यार करती है। उनके पति के जन्मदिन पर प्रोफेसर वर्मा अपनी पत्नी और बेबी के साथ आते हैं। बेबी खेलती है परंतु उनका पैर फिसलनेसे तिपाई पर रखे खिलौने चूर-चूर हो गये तभी प्रोफेसर वर्मा बेबी पर क्रोधित होते है यह देखकर उस सुन्दरीने कहा,` आप बडे निर्दयी हैं। ऐसे प्यारे बच्चे को ताडते हैं ? खिलौनों का मूल्य खेलने में है और जब उनसे खेला जाएगा,तो टूटना जरूरी है।`[२८]

` एक रात : एक शव ` -- इस कहानी में विवाहबाह्य प्रेम को स्पष्ट किया है। इसमें देवरऔर भौजाई का प्रेम है। अपने पति और बेटे होने पर भी वह अपने देवर से प्रेम करती है। इस प्यार का पता लगने के कारण उनके पति खुद तालाब में जान देते हैं। उनके बडे बेटे से यह मालूम होने पर वह घर छोडकर चला गया है और अब छोटा भी जा रहा है। ताऊजी जो उनके देवर हैं उनकी एक दिन मृत्यु हो जाती है। तब चाची बोली,` जेठजी के मरने का दु:ख तो इसे हुआ है। ` दूसरी एक औरत बोली` सच बहना,जेठ के साथ यही तो राज करती थी। हाय, कैसा कलजुग है। दोनों सगी बहनें हैं। बडी बहन का हक छीन लिया कुल बोरन ने। वही कुकर्म देखकर तो इसके मालिक ने तालाब में डूब कर जान दे दी थी। उडा दिया कि पैर फिसल गया।`[२९]

` राजम्मा ` -- इस कहानी की नायिका राजम्मा है, जो अपने पति होते हुए भी पति के मित्र राजगोपाल से प्रेम करती है। जो बात राजम्मा के मन में है वही बात राजगोपाल के मन में नहीं है क्योंकि वह अपने मित्र नारायणन से धोखा नहीं देना चाहता। राजम्मा एक दिन राजगोपाल के घर आती है और नारायणनने उसके पैर पर जो घाव किया है वही दिखाती है तब वह क्रोधित होकर नारायणन को दोष देता है और मरहम लाने के लिए बाजार में जाने के लिए उठा। तब राजम्मा बोली,` न - न , साधारण-सी चोट है,ठीक हो जाएगी। असली चोट तो मन की है। उस पर कौन-सा मरहम लग सकता है, अलबता यह बात विचारणीय हो सकती है।`[३०] लेकिन वह रुका नहीं चला गया और चार घण्टे बाद आकर देखा तो घर में राजम्मा नहीं है।

` बस इतना भर ही ` इस कहानी में वैवाहिक संबंध और विवाहबाह्य संबंधों का चित्रण है। अपनी पत्नी होते हुए भी कुछ पुरुषों को अन्य स्त्रियों का आकर्षण रहता है। पुरुषों में ही नहीं है तो ऐसा आकर्षण आमतौर पर स्त्रियों में भी होता है। इस आकर्षण के कारण वे अपने जीवन में एक तरह की बाधा निर्माण करते हैं और अपने सुखी जीवन को नष्ट करते है। मनुष्य का मनुष्य पर भरोसा न हो तो वह हर एक को उसी नजर से ही देखता है। इसी को स्पष्ट करनेवाली यह

कहानी है। अपनी पत्नी सुन्दर होते हुए भी पति अरुण दूसरी स्त्री को अपनाता है और इस का पता उसकी पत्नी इला को लगने पर वह उन्हें रोकने की चेष्टा करती है। तब वह उसे कहता है, " मेरे रास्ते से हट जाओ। सोलह वर्ष तक मैं एक भ्रम पालता रहा हूँ। तुम्हारी और मधुरिमा की कोई तुलना नहीं है। वह रुप और यौवन का प्रतीक है। नारीत्व का गौरव है। उसमें गति है आकर्षण है। तुममें है मात्र बस एक ठहराव। तुम पत्नी हो सकती हो, संगिनी नहीं। वह उष्मा तुममें नहीं है। मुझे अपनी बुद्धि पर तरस आता है। कैसे मैं तुम्हारे लिए बावला-सा इधर-उधर भागता रहा ? कैसे मैंने तुमको पाने का हठ किया ? कैसे इतने वर्ष बिता दिए इस भ्रम में ? लेकिन अब मैंने अपनी मंजिल पाली है।"[३१] और अरुण इला को छोडकर चला जाता है।

' चैना की पत्नी ' -- इस कहानी में ठेके के कारण जो संघर्ष निर्माण होता है उसको स्पष्ट किया है। चैना छप्पर बाँधने का काम करता था। उसकी मृत्यु एक दिन हो जाती है। तब यही काम उनका बेटा रामसुख करता है। उसकी माँ अपने बच्चों को छोडकर किसी दूसरे मर्द के पास भाग जाना चाहती है इससे झगडा होकर रामसुख को गिरफ्तार कर लिया और उसकी माँ भाग गई। नए ठेके की घोषणा की इतने में चैना की पत्नी वहाँ आई। उसमें और उसके मर्द में झगडा होता है। वह चीखी, पीछे हट जा मुझे छू मत ना, ना, यह ठीक है, मैंने तुझसे करेवा किया है। मैं तेरी हू। इस वक्त भी तेरी हूँ, लेकिन इस का यह मतलब नहीं हो जाता, तू मेरे बेटे के मुँह का कोर छीन ले। मैं कहीं भी रहूँ, मेरे बेटे को मुझसे कोई नहीं छीन सकेगा.... ।"[३२]

इस कहानी में एक औरत का चित्रण है जो अपने पति मरने के बाद अपने परिवार को छोडकर अपनी वासना को बुझाने के लिए किसी दूसरे मर्द के पास चली जाती है।

प्रेम की समस्याएँ --

कहानियों में सौन्दर्य और आकर्षण वृध्दि का प्रधान उपकरण प्रेम है। कहानी साहित्य का आधार प्रेम है, लेकिन इसका यह अर्थ करना भूल होगा कि बिना प्रेम के कहानियों की सृष्टि ही नहीं हो सकती। जो मोहक भाव हमारे मन को मुग्ध और चित्त को प्रसन्न कर देता है,वही भाव कहानियों के लिए श्रेयस्कर है,चाहे वह प्रेम-भाव हो, चाहे और कोई। प्रेम-भाव कहानी में अवश्य हो और उसीसे कहानी का सौन्दर्य बढता है, यह धारणा सर्वथा निर्मूल और निराधार है। अत: संसार की प्राय समी कहानियों में प्रेम-भावना की प्रधानता है। पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध ही कुछ,ऐसा है कि उसके विषय में जितना लिखा जाए,थोडा है,। प्रेम जीवन है,जीवन ही क्यों, वह ईश्वर है,लेकिन प्रेम सम्बन्धी कहानियों को लिखते समय लेखक को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रेम प्रेम ही रहे,वह वासना में परिणत न हो जाए। दिव्य भावनाओं के लिए प्रेम में अशान्ति और असंयम की आवश्यकता नहीं वरन आशा,अनूठी प्रतीक्षा,पवित्रता,व्यापकता और निर्मलता की आवश्यकता होती है। प्रेम को सदैव बाह्य सौन्दर्य पर निर्भर न रहकर आन्तरिक सौन्दर्य को अपना केन्द्र बिंदु बनाना चाहिए। परंतु आज प्रेम की ओर देखने की दृष्टि ही बदल गयी है।

`शरीर से परे` -- इस कहानी में प्रेम के भावनिक रुप की चर्चा है। प्रदीप एक साहित्यिक है और उसके साहित्य पर रश्मि एक विवाहिता प्रेम करती है। उनकी प्रत्यक्ष मुलाकात होने पर वह उनसे प्रेम करती है। वह अपने पति से भी प्रेम करती है और प्रदीप से भी। परंतु प्रदीप उसे नहीं चाहता। क्योंकि वह उसके शांत जीवन में अशांति नहीं लाना चाहते। वह बोली,' मैं तो सदा तुम्हारे साथ रही हूँ। तुमने मुझे दूर क्यों समझा प्रदीप ? मैं तुम्हें चाहती हूँ, शरीर को नहीं। शरीर तुम नहीं हो।'[33] प्रेम की इस समस्या के कारण सुरेश और रश्मि में संघर्ष होता रहता है। यह देखकर प्रदीप उस नगर को छोडकर जाता है। परंतु रश्मि फिर भी उन्हें चाहती है। यहाँ प्रदीप की हर रचना में जाने-अनजाने उसका ही चित्रण होता रहता है।

` हिमाल की बेटी ` इस कहानी की नायिका रेवती कुशलानंद से प्रेम करती है और श्रीधर से भी अपने मनसे हटा नहीं सकती । वह कुशलानंद के बेटे की माँ बनने जा रही है । वह उनसे शादी करने का वचन देता है परंतु करता नहीं । तब उसकी इज्जत बचाने के लिए श्रीधर उससे शादी करता है । कुछ दिनों के बाद रेवती को बेटा होता है और उसे बचाने की चेष्टा में श्रीधर का अंत हो जाता है । तब कुशलानंद उस के पास आता है और कहता है," क्या तुम मुझे मेरे बेटे को बेटा कहने का अधिकार नहीं दोगी ?"[३४] परंतु श्रीधर के खातिर वह फिर उससे चाहकर भी प्रेम नहीं करती ।

` साँचे और कला ` - इस कहानी में प्रेम का चित्रण है । बिरजू और दुलारी एक दूसरे से प्रेम करते हैं परंतु वे एक दूसरे के नहीं हो जाते । परंतु उन्होंने अपनी याद के रूप में दुलारी के पास राधा-कृष्ण की मूर्ति दी है । कुमारी की शादी तय हो जाती है तब वह लेखक के पास वह मूर्ति रखती है और कहती है कि आप ही उसकी सचाई को समझाते हैं । उसी बहाने कभी कभी आया करूँगी । पर वे दोनों भी नहीं आते । लेखक ने उस मूर्ति के पास एक राधा कृष्ण की साधारण मूर्ति रखकर नीचे लिख दिया है -- ` राधा-कृष्ण साँचे और कला... ।"[३५]

` नई ज्यामिति ` - इस कहानी में यौन और प्रेम की समस्या को स्पष्ट किया है । नयनतारा एक अनाथ लडकी है । वह शरण से कहती है, मुझसे कौन विवाह करेगा । मेरे पास धन सम्पदा,माँ-बाप ,कुल मर्यादा कुछ भी नहीं है । तो मैं किस योग्य हो । शरण बोला" तुम एक फूल हो और फूल का उपयोग जानना चाहती हो तो भौरों से पूछो ।"[३६] कुछ दिनों के बाद वह अपने सौन्दर्य के कारण एक मंत्रीजी की सचिव और बाद में बहू बन जाती है । इसमें प्रेम का त्रिकोण दिखाया है ।

` कैक्टस के फूल ` इस कहानी में विवाह का चित्रण है । प्रेम और गिरीश साहित्यकार होने के नाते एक दूसरे की मुलाकात होती है और परिणामत: वे शादी करते हैं । परंतु प्रेमा प्रसिध्दी के पीछे भागती है और उससे ही उन दोनों

को जुदा होना पडा । साहित्य कार की प्रतिष्ठा यह कैक्टस के फूल की तरह है जो उसे हर समय नहीं मिलती । माँ-बाप के विरुध्द गिरीश शादी करता है और प्रसिध्दी के पीछे भागनेवाली पत्नी मिलने के कारण निराश हो जाता है । इस नायिका की अन्त में शोकान्तिका हो जाती है ।

` समझौता ` इस कहानी में प्रेम के साथ यौन संबंध का चित्रण है । पति व्यापार में डूबने के कारण पत्नी उसे बचाने के लिए उसके मित्र के साथ सौदा करती है । फिर भी पति उसे अपनाता है । वह कहता है, " जीवन के लिए समझौता, समझौता अनिवार्य है और इसके लिए किया गया कोई भी काम पाप नहीं हो सकता ।"[३७] इसीप्रकार का प्रेम और अपनी पत्नी की ओर देखने का उच्च वर्ग के लोगों का दृष्टिकोण होता है ।

३) स्वार्थ के लिए संघर्ष --

स्वार्थ मानव के जीवन का केन्द्रबिन्दू है । और उससे वह हटना नहीं चाहता स्वार्थ के कारण मानव मानव का शत्रु बन गया है । मानव स्वार्थ के कारण अपने आप को नष्ट कर देता है । स्वार्थ धन - सम्पदा के कारण निर्माण होता है और मानव मानव के बीच एक तरह की खाई निर्माण होती है । धन, सम्पदा, जमीन और जायदाद के कारण मानव मानव में संघर्ष निर्माण होता है । स्वार्थों के कारण आधुनिक युग में तो बहुतसे संघर्ष निर्माण हो गए हैं और होते रहेंगे । हर परिवार में या हर मनुष्य में यह स्वार्थी वृत्ति दिखाई देती है । जो आज स्वार्थ के कारण संघर्ष निर्माण होते हैं उनको देखकर और सुनकर, विष्णु प्रभाकर जीने अपने साहित्य के माध्यम से हमारे सामने रखा है । उनकी कुछ कहानियों में इस स्वार्थ का चित्रण है ।

` नाग - फाँस ` इस कहानी में एक स्वार्थी माता का चित्रण है । हर परिवार में अपने कुल के दीपक को अपने अंकित रखने की चेष्टा रहती है । माँ-बाप के अति स्नेह के कारण कुछ बच्चे बिगडते हैं । वे अपने आप को जैसा चाहे वैसा आचरण करने लगते है । इस कहानी की माँ-बाप के स्नेह, के कारण उनके कुछ बेटे उन्हें छोडकर घर से कही दूर जा बसे हैं और जो अब उनके पास हैं उनमें से एक

बीमार है । उनको डाक्टर दवाई देते हैं पर वह ठीक नहीं होता । डाक्टर हर कोशिश करते हैं । पर माँ को डर है कि यह बेटा अगर ठीक होगा तो वह भी अपने भाई की तरह घर छोड़कर चला जायेगा । इस डर के कारण माँ उसे दवा नहीं पिलाती यह देखकर पिताने डाक्टर से कहा कि," माँ का स्नेह पुत्र का काल बना हुआ है डाक्टर । "[३८] आधुनिक युग में भी कुछ माता ऐसी दिखाई देती है ।

` भोगा हुआ यथार्थ ` - इस कहानी में एक स्वार्थी व्यक्ति का चित्रण है । पारसनाथ बाबू ने अपने परिवार के लोगों को धन सम्पदा के कारण जान-बुझाकर मार डाला है । इस अन्याय के कारण वे जीवन में सुखी नहीं है । उन्होंने अपने हाथों से जो जो बुरा कार्य किया है वही उन्हें स्वप्न में दिखाई देता है और वे उससे डरते हैं । उन्हें एक रात को अपनी पत्नी,भाई और बेटी इनको किस तरह से मारा है यह स्वप्न में याद आता है । उनके सामने वही एक एक मूर्ति उभर आती है और अपने साथ जो अन्याय हुआ है वह कहती है जिसको सुनकर बाबू तडपते हैं । बाबू धीरे से बोले," मैं नहीं जानता तुम यहाँ कैसे आ गए । क्या तुम सचमुच जिन्दा हो ? मैंने तो तुम्हें अपने हाथों से जलाया था । तुम जरूर प्रेत बनकर मेरी हत्या करने आए हो । लेकिन अब उससे क्या होता है ? हत्या,आत्महत्या,मृत्यु-सब एकही है । लेकिन एक बात मैं भी तुमसे कहे देता हूँ,तुम अपनी सम्पति मुझसे किसी भी प्रकार वापस नहीं ले सकते ।"[३९] इस द्वन्द्व में पारसनाथ का अन्त हो जाता है ।

` सत्य को जीने की राह ` - इस कहानी में भी स्वार्थ के लिए संघर्ष दिखाया है । यह कहानी सन १९४७ की घटना पर आधारीत है । दिल्ली महानगर में सन १९४७ में जब बस्तियाँ जल रही थी तब सुरजीतसिंह और संदीप खन्ना ने वहाँ जाकर देखा तो एक लडकी के सिवा कुछ भी नहीं बचा था । उन्हें अकेली देखकर इनके मन में स्वार्थ जागृत होता है । उन्होंने उस लडकी के शरीर को नोचकर जख्मी किया । उस लडकी के स्वर मेरे कानों में गुंज रहेथे --" इसके बाद तुम मुझे जानसे तो नहीं मार डालोगो... ?"[४०] बाद में कीमती सामान बटोर लिया । उसमें कुछ वस्त्र और गहने थे । वे गहनों का बक्स निकाल रहे थे कि तभी वह लडकी होश में आने का भ्रम सुरजीत को हो गया । उसने उस लडकी का सीना चीर

दिया और उस लड़की की सारी शक्ति समाप्त हो गयी पर समाप्त नहीं हुई हमारी जानवर होने की क्षमता ।

४) मानव-मानव के बीच सम्बन्ध --

परिवार में हर मानव का संबंध एक दूसरे से रहता है । मानव अकेला रह नहीं सकता उस को किसी न किसी की जरुरत होती है । परिवार में सभी रिश्ते नाते आते हैं । उसमें माँ-बाप,बेटे,बेटी,दामाद आदि का समावेश होता है ।मानव एक दूसरे के बिना जी भी नहीं सकता । उसे हर समय अपने परिवार की आवश्यकता होती है । ऐसे ही एक परिवार को लेखक विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानी में स्पष्ट किया है ।

` अगम अथाह ` इस कहानी में एक वृध्द आदमी के दु:ख को चित्रित किया है । अपने कुल का दीपक अगर कही खो जायेगा तो उस कुलपति की दशा क्या होती है,यही उस वृध्द की दशा विष्णु जी ने अपनी इस कहानी के द्वारा स्पष्ट की है । वह वृध्द अपने बेटे की खोज में घर से बाहर निकले थे । परंतु उन्हें वह नहीं मिलता । तब वह वृध्द बेचैन होता है तो उसे एक युवक मदद करता है और उनके बच्चे को ढूँढकर लाने का प्रयास करता है । उस युवक को उस वृध्द के बेटे का पता लगता है । वह सैन्य में है परंतु उनकी लड़ाई में मृत्यु हो गई है । इस खबर को उस वृध्द से कहने की हिम्मत करना भी कितना जटिल कार्य है । यही उस युवक रमेश के सामने प्रश्न है ।

` चाची ` इस कहानी में लेखकने स्वयं जो चाची का अनुभव किया है वहीं वे चाची की मृत्यु के बाद लिखा है । चाची लेखक की पड़ोसिन है । वहाँ रहने के लिए लेखक गये तो वहा के लोगोंने प्रथम उन्हें सूचना दी,' चाची से बचकर रहना, करौंदे का झाड है ।'[४१] लेखक कहते हैं कि लेकिन मुझे इसका कभी भी अनुभव नहीं आया । चाची अन्धविश्वासू स्त्री थी । वह सभी पर शासन करना जानती थी । प्यार और शत्रुता दोनों की चरम सीमा उसके लिए सहज गम्य थी । प्यार करती तो सब कुछ लुटा देती, दुश्मनी पर उतरती तो कचहरी तक चली जाती । वह मेरी हर मदद करती रही । उन्होंने मुझ पर अपने बेटे जैसा प्यार किया था । मेरी

माँ के पास वह हर समय आती । उनकी मेरी माँ से बहुत जमती थी । आज मुझे उसके मरने के बाद भी सभी कुछ याद आता है । और उसी याद का ही परिणाम यह कहानी मैंने लिखी ।

` बेमाता ` - इस कहानी में नयी और पुरानी पीढी का संघर्ष चित्रित है । नयी पीढी को पुरानी पीढी के विचार आचार, रहन-सहन आदि अच्छे नहीं लगते । कुछ-न-कुछ कारण वश उनमें झगडा होता ही रहता है । नयी पीढी के युवक और युवतियाँ अपने परिवार के लोगों को ठीक नहीं समझाते । कुछ बहुएँ ऐसी होती हैं कि वह अपने परिवार में मिलकर रहना नहीं चाहती उन्हें उनसे स्वतंत्र रहने की चाह रहती है और वह घर में संघर्ष करने लगती है । ससुर शराब पीते हैं और गालियाँ बकते हैं, यह बहु को अच्छा नहीं लगता । वह इसी कारण अपने पति को लेकर अपने परिवार से कही दूसरे नये मकान में जाना चाहती है । वह अपने सास को कहती है," माताजी, मुझे यह गन्दगी अच्छी नहीं लगती ।` और माताजी, आप पिताजी को समझाती क्यों नहीं कि वे इस तरह गाली न दिया करे । माताजी आप बाबू से कहिए ना कि शराब पीना अच्छी बात नहीं है ।"[४२] वह माता होकर भी बेमाता हो जाती है ।

` फासिल, इन्सान और ` - इस कहानी का प्रमुख पात्र विनोद शंकर है जो एक बडे कलाकार है । उसकी कलापर बेटे, बहू सभी खुश हैं । सिर्फ उनकी कला की कदर करनेवाली उनकी पत्नी नहीं है । विनोदशंकर ने जो रात में कला दिखाई थी उनकी तारीफ करते हुए बेटा मक्भूति अपनी पत्नी रागिनी से कहता है," पापा, तो अब म्युजियम की वस्तु है । पर आज इस रागिनी ने उन्हें जगा दिया । तब रागिनी बोली,` म्युजियम ज्ञान का भण्डार होते हैं । वहाँ से जो ज्ञान प्राप्त होता है वहीं तो सर्वोत्तम है । मेरी थीसिस में प्राण पड गए हैं ।"[४३] इस कहानी में पारिवारिक प्रेमका चित्रण किया है । एक कलाकार की कला को जानने वाला कलाकर ही होता है ।

` राग और अनुराग ` - इस कहानी में पिता-पुत्र का प्रेम चित्रित है । बेटा सतीश की माँ मरने के बाद उनका पालन पोषण पिताजी ने ही किया । वह पढ लिखकर अब शहर में नौकरी करता है । उनकी पत्नी सन्ध्या भी बहुत अच्छी

है । वे दोनों भी पिताजी का ख़याल करते हैं ।पिताजी को वे गाँव से शहर अपने पास लाते हैं । उन्हें पिताजी आने के कारण बहुत आनंद होता है । कुछ दिन रहने के बाद पिताजी ने यह महानगरीय जीवन देखकर गाँव जाना ही उचित है ऐसा सोचा ■ पिताजी बेटे और बहू को हर समय कुछ न कुछ सुनाते रहते हैं पर उन्हें उसमें कुछ भी गैर नहीं लगता । उनके उपदेश को सुनकर सतीश ने कहा,' अब आप इन सब बातों की इतनी चिन्ता क्यों करते हैं । आपने कितना किया है । अब छोडिए भी,आराम कीजिए ।'[४४] पिताजी की बातों में उन्हें बुरा नहीं लगता । लेकिन आज ऐसी बातों को सुनने वाले बेटे और बहुएँ कम ही हैं ।

ड) अन्य समस्याएँ --

सामाजिक,आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के साथ ही अन्य समस्याओं का भी चित्रण विष्णु प्रभाकरजी ने अपनी कहानियों में किया है । इन समस्याओं के अन्तर्गत राजनीतिक समस्याएँ,भ्रष्टाचार की समस्याएँ और सौन्दर्य लालसा की समस्याएँ आदि का उल्लेख किया गया है ।

१) राजनीतिक समस्याएँ --

राजनीतिक समस्याओं के अन्तर्गत जो राजनीति में दिखाई देता है उनका चित्रण होता है । कुछ लोग अपने कारोबार में नेक रहते हैं । परंतु कुछ उसके विरुध्द होते हैं । जो सरकार के द्वारा लोगों को मदद मिलती है वही उन तक पूर्ण नहीं पहुँचती । ऐसे अनेक प्रसंगों को विष्णु जी ने अपनी कहानियों में स्पष्ट किया हैं ।

` रहमान का बेटा ` इस कहानी में राजनीति पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने लिखा है कि` तनखा बाँटते वक्त अँगूठा पहले लगवा ले वे और पैसों के वक्त किसी गरीब को ऐसी दुत्कार देवे कि बेचारा मुँह ताकता रह जावे'[४५] रहमान का बेटा अपने परिवार को सुधारना चाहता है । उसे अपने परिवार की गन्दी स्थिति के कारण घर छोडकर जाता है ।

` सम्बल ` - इस कहानी में एक इमानदार सैनिक की आत्मकथा को मारा है । वह एक सैनिक होने के नाते देश सेवा करता रहता है और देश पर

अपनी जान भी कुर्बान कर देता है । उनका विचार था` मैं जानता हूँ, हिन्दुस्तान बहुत जल्द आजाद होगा और तब हमें उसकी रक्षा करने का अवसर मिलेगा ।'[४६] मि.सिंह में बहुत अच्छे गुण हैं परंतु उसके साथ एक दुर्गुण भी है कि वे शराब खूब पीते हैं और लोगोंपर भडकते हैं । उनकी पत्नी बहुत शांत और भली स्त्री है । वह उन्हें सँभलनेका काम करती है ।

` जज का फैसला ` - इस कहानी में एक न्यायी जज का चित्रण किया है । जिसे एक दुर्घटना से संबंधित एक विचित्र मामले का न्याय करना पडा था । वह घटना इस प्रकार है -- एक युवकने अपनी पत्नी का सौन्दर्य दुर्घटना में नष्ट होने के कारण उसे मार डाला था । इस बात का विवरण रेल के डिब्बे में चलता है । जज लोगों को उस घटना की जानकारी देते हैं तब लोग सुनकर बोले,' निस्सन्देह आपने उसे मुक्त कर दिया होगा क्योंकि वह ... वह ... ।' जज कहते हैं अगर आप जूरी होते तो क्या करते ? वे बोले निस्सन्देह छोड देते । सुनकर जज बोले, ' उस दिन की जूरी ने भी यही कहा था । पर मित्रो । मैं उसके साथ अन्याय नहीं कर सका । मैं जानताहूँ, मैंने बहुत-से मुकदमों में अन्याय किया है, पर इस फैसले पर मुझे सदा गर्व रहेगा । मैंने उसे फाँसी की सजा दी थी ।'[४७] इसीसे साबित होता है कि जज महोदय ने जो फैसला किया है वही कानून के अनुसार किया है । उन्होंने उस अन्यायी को योग्य न्याय दिया और अपना फर्ज निभाया ।

` स्वर्ग और मर्त्य ` इस कहानी में एक राजा का चित्रण है जो सौन्दर्य का लालसी है ।वह महाराज देवलोक में उर्वशी शचि इन्द्राणी के सौन्दर्य पर मोहित होते हैं और उसे पाने के लिए उसकी जो भी शर्त है उसे मंजूर करते हैं । उनकी पालकी उठाने वाले ऋषियों को उनका पैर लगता है तब वे उन्हें पटक देते हैं और राजा को नीचे खींचते हैं तब उन्हें एक स्वर सुनाई देता है,` आज गिरा हूँ तो क्या हुआ, कल फिर उठूँगा ।'[४८] इसमें ऐसे गिरते मूल्यों का आचरण करने - वाले राजा का चित्रण किया है । सौन्दर्य के लिए आकर्षण और अट्टाहास करने की प्रवृत्ति आज भी दिखाई देती है ।

` पूल टूटने से पहले ` -- इस कहानी में राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है । राजनीति में हर एक को समान अधिकार होता है । परंतु वास्तविक

स्थिति कुछ अलग ही है। सरकार तो जनता को राशन देती है परंतु वह जनता तक आने के पहले ही बीच में गायब हो कर काले बाजार में चला जाता है। परिणामत: मध्यवर्गीय लोगों को इसका परिणाम भुगतना पडता है। इसके बारे में लेखक और उनके मित्र रेस्तरॉ में कॉफी लेते हैं तभी उन दोनों में बात होती है। लेखक कहते हैं अच्छा कॉफी आ गई। कितनी चीनी लेते हैं आप ? .... अरे,आप भी एक ही चमच लेते हैं मुझे भी एक ही की आदत पड गई है। जी,हाँ, घर पर पत्नी एक ही चमच देती है। और वह भी क्या करे ? सरकार तो चाहती हैं कि हम एक चम्मच भी न डालें। क्या कहा, वे बोले क्या कहा,बाजार में बहुत है, जितनी चाहे खरीदो। पर साहब,बाजार का तो जेब से संबंध है। जब जेब खाली हो तो भरा रहे बाजार ... ।[४९]

` मंजिल ` इस कहानी में एक देश सेवा करनेवाले पति-पत्नी का चित्रण है। राजनीति में हर एक को धोखा खाना पडता है। राजनीति में कार्य करनेवालों के मन में पद और प्रतिष्ठा की लालसा रहती है। इस लालसा के कारण ही वे कार्य करते हैं। इस कहानी में एक दाम्पत्य पति और पत्नी मिल कर ऐसे कार्य करते हैं। पत्नी स्कूल में अध्यापिका है। वह भी आजादी के समय आजादी के नारे लगाती हैं। देश स्वतंत्र हो चुका है परंतु उन्हें कोई पद नहीं मिला। तब वे एक दलसे दूसरे दल में प्रवेश करते हैं। पर उन्हें हर दलों में घूमना ही पडता है। वे अन्त में दक्षिण पंथियों में जाते हैं और वहाँ उन्हें चुनाव में टिकट देने का निर्णय हो जाता है। परंतु पैसों के कारण वे टिकट दूसरे किसी व्यक्ति को देते हैं। तब वे पति-पत्नी बहुत नाराज होते हैं और वे सोचते हैं जो आजादी मिली है उनका रक्षण करना भी एक काम है। यह समझकर वे काम करते रहते हैं।

` चिरन्तन सत्य` इस कहानी में राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है। इस कहानी में दिखाया है कि पुलिस और नेता लोग एक दूसरे के विरोधी होते हैं। १९४७ के खूनी दिनों के समय एस.पी.साहब ने जानकी रमण बाबू को गिरफ्तार किया और उसके बाद जो हुआ यही उन्हें याद आता है। गुंडा गिरी करने के कारण गोविंद मिश्र को एस.पी.साहब ने झूठे मुकदमें में फँसाकर जेल ठूँस दिया

था । गोविंद मिश्र ने कहा था ,` जिस दिन जनता अधिकार माँगने आयेगी,उस दिन देखा जायेगा । एस.पी.ने कहा,` जनता के बच्चे । राजा हम हैं । जनता पर हमेशा हुकूमत की जाती है ।`[५०] पोलिस वालों के अन्याय अत्याचारों का वर्णन इसके अन्तर्गत हुआ है ।

` राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा ` -- इस कहानी में राजनीति में अपने कारोबार के लिए पुत्र को स्थान दिया जाता है और उसे पाने के लिए जो चेष्टा की जाती है उसका वर्णन है । राजगद्दी के लिए अगर अपना पुत्र न होतो किसी दूसरे के पुत्र को गोद में लेते हैं तो कुछ लोग इससे भी आगे बढकर किसी के पुत्र को खरीद लेते हैं । इस कहानी में जो महाराज हैं वहीं किसी क्लर्क का बेटा है । वह क्लर्क अपनी परिस्थितियों के कारण अपने पुत्र को किसी राजघराने में बेच देता है । और उसके बदले में धन लेता हैं । ऐसे बहुतसे राज हो गए हैं कि उनके कुल,वंश, जात,धर्म आदिका पत्ता तक नहीं है ।

२) भ्रष्टाचार की समस्याएँ --

भ्रष्टाचार आज समाज में सभी और दिखाई देता है । भ्रष्टाचार के कारण गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं और अमीर अमीर बनते जा रहे हैं । भ्रष्टाचार करना यह एक फॅशन बन गई है । और इस फॅशन की दुनियाँ में हर एक आगे बढने लगा है । जो भ्रष्टाचार दिखाई देता है उसका चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में किया है ।

` धरती अब भी घूम रही है ` - इस कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण है । इसमें भ्रष्टाचार में दो चीजों को महत्व दिया है उनमें एक है पैसा और दूसरी खुबसूरत लडकी । रुपया और खूबसूरत लडकी ये दो रिश्वत की चीजे मानी हैं । रिश्वत के बारे में मैसा कहते हैं,` रिश्वत और तरह की भी होती है । एक प्रोफेसर ने एक लडकी को एम.ए.में अव्वल कर दिया था क्योंकि वह खूबसूरत थी...`[५१] रिश्वत के कारण न्याय देने वाले भी कई बार अन्यायी होते हैं । जो भ्रष्टाचार दिखाई देता है वही सही शब्दों में अपने साहित्य में लेखकने प्रस्तुत किया है ।

` छोटा चोर बडा चोर ` - इस कहानी में भी रिश्वत की समस्या का चित्रण है । हर व्यक्ति चोर होता है लेकिन उसमें कुछ बडे चोर होते हैं तो कुछ छोटे । बडे बाबू एक बडे चोर हैं और उनका सेवक एक छोटा चोर है । सेवक अपने पिताजी जो बीमार हैं उनको एक कोट की जरुरी है इसीलिए कोट की चोरी करता है पर उसमें एक चैन होती है यह देखकर वह अपनी चोरी की सचाई को साबित करने के लिए कोट वापस लाता है । वह अपने आपको कहता है,` नहीं, नहीं मैं सीधे बडे बाबू के पास जाऊँगा और कहूँगा कि मैंने चोरी की है । मुझे सजा दीजिए ।`[५२] वह अपनी सचाई को साबित करता है और भ्रष्टाचार से मुक्त होता है ।

` पूल टूटने से पहले ` -- इस में जो भ्रष्टाचार का वर्णन किया है वह मार्मिक है । भ्रष्टाचार के कारण मनुष्य खुद को भी बेचता है । लेना और देना यही चलता ही रहेगा । परंतु इसमें आमतौर पर लोगों का नाश होता जा रहा है । लेखक स्वयं इसके बारे में कहते हैं,` मेरी पत्नी अक्सर आबरू ढकी रखने को पेट काटने की बात करती है । और कुछ लोग हैं कि पेट भरने के आबरू बेच देते हैं`[५३] । आजकल कितना काला धन निकल रहा है । कहते हैं सरकार की कुल सम्पत्ति से अधिक नम्बर दो का पैसा बाजार में है । और दोष देते हैं इन हिप्पियों की नारियों को क्योंकि इनमें जो नारियाँ हैं वे किसी के साथ भी बीस-पचीस रुपयों में रात बिता देती है । चुनाव में सभी दल नम्बर दो के पैसे से चुनाव लडते हैं और इतिहास साक्षी है इसका ।

` एक मैात समन्दर किनारे ` -- इस कहानी में नम्बर दो के धन का चित्रण किया है । पत्रकार ललित बागची आज एक फर्म का डायरेक्टर है,जहाँ से वह प्रतिदिन तेरह हजार रुपये नम्बर दो के धन प्राप्त करता है । उन्हें शैलेन्द्र पूछता है कि क्या करते हैं आप इतने धन का ? कहाँ रखते हैं ? ` इम्पीरियल होटल के कमरे में बैठा बागची बोला,` ऐश्वर्य और विलास की कोई सीमा नहीं होती और रखने के लिए जूट की बोरियाँ सबसे अच्छा स्थान है । चौंको मत । कालाधन बोरियोंमें ही बंद रहता है । वहीं से उसका एक भाग विलासिता पर खर्च होता है । दूसरा भाग राजनीतिक पार्टियों को जाता है । सत्ता सेवा से नहीं,काले धन

से प्राप्त की जाती है। और फिर सत्ता से काला धन अर्जित किया जाता है। बीसवीं सदी के अर्थशास्त्र का यही मूल सिध्दान्त है। [५४]

` सलीन ` - इस कहानी में दिखाया है कि कुछ लोग भ्रष्टाचार के विरोध में होते हैं परंतु उनको कुछ लोग भ्रष्टाचारी बनाने का काम करते हैं। जो रिश्वत नहीं लेना चाहते उन्हें रिश्वत लेने के लिए मजबूर किया जाता है। प्रमोद सक्सेना रेल विभाग में काम करते हैं। वे बडे इमानदार आदमी हैं। परंतु उनके विभाग में जो भ्रष्टाचार चलता है वहीं उन्हें मालूम है। इसीकारण डिवीजनल सुपरिन्टेन्डेण्ट श्री दुर्गाप्रसाद वोहरा उनको` भ्रष्टाचार-निरोधक दल` में एक उँचा पद देना चाहते हैं। प्रमोद सक्सेना के साथी रिश्वत लेते हैं और उनमें उनपर भी आरोप लगायाजाता है। तब वे पत्नी से बोले," हाँ ,हाँ ,मैंने रिश्वत माँगी नहीं थी। जब माँगी ही नहीं तो स्वीकार क्यों करूँगा ? लेकिन यह भी तो सच है कि उन्होंने दी थी और मैंने और साथियोंने ली थी[५५]।" इस कहानी में एक इमानदार अफसर पर किस तरह आरोप लगाया जाता है यही दिखाया है।

` मंजिल ` -- इस कहानी में राजनीतिक भ्रष्टाचार का वर्णन है। राजनीति में लोग पद और प्रतिष्ठा के लिए कार्य करते हैं। ऐसे ही एक दाम्पत्य का इसमें चित्रण है। वें देश को प्यार करते थे और प्यार के लिए कुर्बानी भी कई बार की थी। पत्नी स्कूल में बच्चों को पढाती है। वह भाषण देती फिरती है। पति को आजादी के लिए जेल जाना पडा था। आजादी मिली परंतु उन्हें शान्ति नहीं मिली। उन्हें कोई पद नहीं मिला। इसीलिए वे मध्यमार्गी जनतंत्र दल को छोडकर दक्षिण पंथियों के दल में प्रवेश किया। उस दल ने उन्हें चुनाव का टिकट दिया परंतु अगले दिन सबेरे ही उस दल के अधिकारी आये और बोले, " दल के लिए एक हजार रुपये दो।" वे पैसे न देने के कारण चुनाव का टिकट किसी दूसरों को देते हैं। राजनीति में ईमानदारी से काम लेना ठीक नहीं है। इस क्षेत्र में बहुत भ्रष्टाचार चलता है। इस भ्रष्टाचार के कारण सच्चे और ईमानदारी से कार्य करते हैं उन्हें कोई पद या प्रतिष्ठा नहीं मिलती लेकिन जो गलत मार्ग को अपनाते हैं वे इस पद और प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं। यही हर समय राजनीतिमें होता आया है और आगे भी होता रहेगा ऐसा लगता है।

३) सौन्दर्य लालसा --

सौन्दर्य - संसार की प्राय: सभी वस्तुएँ हमें दो प्रकार से आकर्षित करती हैं । प्रथम जब हम किसी वस्तु की ओर उपयोगितावाद का सिध्दान्त लेकर चलते हैं । द्वितीय, जब हम उसकी सुन्दरता से प्रभावित होकर उस पर मुग्ध होते हैं । उपयोगी वस्तुओं से हमे लाभ होता है और सुन्दर वस्तुओं से हमारा जीवन कल्याणकारी होता है । जो सुन्दर है,वही सत्य है और वही हमारे लिए कल्याणकारी है । अत: हम कहानियों में किसी पात्र के असाधारण त्याग अथवा बलिदान की झाँकी देखते हैं,तो जीवन के निम्न स्तर से ऊपर उठकर हम उसकी महत्ता का अनुभव करते हुए उसे एक दिव्य रूप में देखने लगते हैं । कहानी का उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहीं है, वह तो कोई ऐसी प्रेरणा चाहती है कि जिसमें सौन्दर्य की झलक हो और जिसके द्वारा वह पाटक की सुन्दर भावनाओं को स्पर्श कर सके । कहानियों में ऐसे सौन्दर्य से ही सत्य, सत्य से प्रेम और प्रेम से वास्तविक आनन्द की प्राप्ति हो सकती है । ऐसे ही प्रेम का चित्रण निम्न कहानियों में मिलता है ।

` जज का फैसला` -- इस कहानी में सौन्दर्य लालसा के कारण जो होता है उसको स्पष्ट किया है । एक जज का फैसला इसमें बताया है । पति-पत्नी एक-दूसरे पर बेहद प्यार करते हैं परंतु दुर्घटना में पत्नी का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है तब पति उसे मार डालता है । इसी का फैसला जज उस पति को फाँसी देते हैं । और अन्याय करनेवाले को नष्ट करते हैं । जज ने कहा," उसे जीवित रखना उसकी पवित्र भावना का अपमान होता ।" सौन्दर्य के पीछे हर व्यक्ति भाग रहा है और वह नष्ट हो जाने पर किसी की जान तक लेते हैं । यही आज भी दिखाई देता है ।

` स्वर्ग और मर्त्य ` - इस कहानी में सौन्दर्य का आकर्षण दिखाई देता है । इस कहानी की नायिका एक चिर यौवना रूपसी उर्वशी है । उसके सौन्दर्य के कारण राजा नहुष उस पर मुग्ध होता है यह देख कर उर्वशी अपनी सखी से कहती है," जानती हूँ मैंने ही तो उस नर पुंगव में वासना की अग्नि प्रज्वलित की है । वह वासना हमारी वासना की तरह निरपेक्ष नहीं है । वह नर की वासना है । उसमें शोले उठते हैं और उन शोलों में पड़कर स्वयं नर ही नहीं बल्कि समस्त संसार

मस्मसात हो जाता है ।

` मटकन और मटकन ` - इस कहानी में जो आधुनिकता में सौन्दर्य का आकर्षण है वहीं दिखाई देता है । मनुष्य सौन्दर्य को हर कीमत पर पाना चाहता है । सांत्वना सर्वजीत को बोली आप शायद जूडिथ के लौट जाने से परेशान है , वह बोला नहीं, था । अब तो तुम आ गई । उससे कहीं आकर्षक,कहीं मोहक हो । तुम्हारी कमनीय देहयष्टि ,तुम्हारे मदभरे नयन,तुम्हारी लम्बी सुनहरी केशराशि..[५६] इस सौन्दर्य को सर्वजीत अपनाना चाहता है परंतु वैसा होता नहीं । वह सिर्फ सौन्दर्य का भूखा है । जूडिथ को एक बच्ची है वह सांत्वना को कहती है," मेरी तो शादी ही नहीं हुई पर इसके पिता वे अवश्य है । बहुत सुन्दर है । उनसे ही इस लम्बी यात्रा में मैंने यह सुन्दर बच्ची प्राप्त की है ।"[५७]

` नई ज्यामिति ` -- इस कहानी में सौन्दर्य का चित्रण किया है । लडकी की शादी कुल मर्यादा,धन,सम्पदा को ही देखकर नहीं की जाती तो उसके सौन्दर्य को देखकर भी की जाती है यही इस कहानी में दिखाया है । आमतौर पर लोग लडकी के सौन्दर्य को देखकर उससे शादी करते हैं तो कुछ उसके परिवार और धन को देखकर करते हैं । यही आधुनिक युग में हर जगह दिखाई देता है ।

` बस,इतना भर ही ` - इस कहानी में सौन्दर्य का आकर्षण है । मानव सौन्दर्य के पीछे भागकर अपना सर्वस्व खो बैठता है । जिस सौन्दर्य को पाने के लिए अरुण पागल था वही पाने के बाद उसके मनमें किसी दूसरे सौन्दर्य की लालसा पैदा होती है । इला एक उन्नीस वर्ष की युवती थी किसी पुरुष को आकर्षित करने के लिए जो कुछ अनिवार्य है,वह सब उसमें था । वह कहती है कि अरुण पागल था उस रुप का । बहुत अच्छी तरह याद है वह दिन, जब वह उतावला-सा मेरे पास आया था और एका-एक अधिकार भरे स्वर में उसने कहा था," मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता । तुम्हें मुझसे विवाह करना होगा । अभी,इसी हफ्ते ।"[५८] और हमने विवाह किया पर मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जाने के बाद अरुण किसी दूसरी स्त्री के सौन्दर्य के पीछे भागा ।

`एक और कुन्ती` - इस कहानी की नायिका प्रतिमा एक सुन्दरी है। उस सौन्दर्य के कारण उन्हें अपने पति की मृत्यु के बाद अनेक मर्दों के पास जाना पडा। हर औरत के अंतर में एक मर्द रहता है। उसी तरह में हर मर्द को अपने सौन्दर्य के कारण आकर्षित करने लगी। वह कहती है कि, हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष में किसने मेरे पति को मार डाला और मेरे साथ बलात्कार किया। तब मुझे नूरने बचाया क्योंकि मैं नारी थी और सुन्दर भी - नर - नारी का यही संबंध शाश्वत है न ....[५९] हर व्यक्ति के अन्दर सौन्दर्य की लालसा रहती है और उसे वह पाने के लिए संघर्ष करता है।

निष्कर्ष

विष्णु प्रभाकरजी की उपर्युक्त कहानियों में चित्रित जो समस्याएँ मिलती है उनमें प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा अन्य समस्याओं का अध्ययन किया है। सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के अन्तर्गत जाति, धर्म, वंश, मानव - मानव के संबंध अवस्थाओं के आधार पर निर्माण होनेवाले संघर्ष, विवाह बाह्य और वैवाहिक संबंध, स्वार्थ के लिए संघर्ष आदि विविध समस्याओं पर प्रकाश डालनेका कार्य किया है।

अन्य समस्याओं के अन्तर्गत राजनीतिक समस्याएँ, भ्रष्टाचार की समस्याएँ तथा सौन्दर्य लालसा आदि का दर्शन हुआ है। विष्णुजी ने कहानियों में विभिन्न समस्याओं को उठाया है। उनके कहानियों के पात्र कथावस्तु को उचित न्याय देनेवाले है। उनकी कहानियों के बहुत से पात्र उनके परिवार के लोग ही रहे हैं। वे स्वयं भी कुछ कहानियों के पात्र रहे है। विष्णु प्रभाकर जी ने यथार्थ को सामने रखकर कहानियाँ निर्माण की है। इसीलिए उनकी कहानियों में नाटकीयता कम वास्तविकता जादा दिखाई देती है। वास्तवता को सामने रखकर लिखनेवाले वे एक महान साहित्यकार है। आज भी वे इसीतरह का कार्य निरन्तर करते जा रहे है।

संदर्भ

१ रहमान बा बेटा (धरती अब भी घूम रही है) पृ.३०
२ नाग फाँस (--,,--) पृ.५५
३ ठेका (--,,--) पृ.७५
४ कितना झूठ (--,,--)पृ.९३
५ आश्रिता (--,,--) पृ.११६
६ नई ज्यामिति (साँचे और कला) पृ.३३
७ तूफान (एक और कुन्ती) पृ.३६-३७
८ अधूरी कहानी (धरती अब भी घूम रही है) पृ.१०१
९ मेरा बेटा (--,,--) पृ.१२७
१० एक पुरानी कहानी(साँचे और कला) पृ.७३
११ मटकन और मटकन(पुल टूटने से पहले) पृ.३२
१२ अँधेरे आंगन वाला मकान(एक और कुन्ती) पृ.१६४
१३ एक मौत समंदर किनारे (पुल टूटने से पहले) पृ.३८
१४ ढोलक पर थाप (--,,--) पृ.९७
१५ रहमान का बेटा (धरती अब भी घूम रही है) पृ.२६
१६ ठेका (--,,--) पृ.७५
१७ समझौता (साँचे और कला) पृ.९१
१८ तिरछी पगडंडियाँ(एक और कुन्ती) पृ.६२
१९ धरती अब भी घूम रही है (धरती अब भी घूम रही है) पृ.९
२० रहमान का बेटा (-- ,, --) पृ.२५
२१ गृहस्थी (-- ,, --) पृ.३८-३९
२२ साँचे और कला (साँचे और कला) पृ.२२
२३ पुल टूटने से पहले (पुल टूटने से पहले) पृ.११
२४ एक मौत समंदर किनारे (--,, --) पृ.४०
२५ चन्द्रलोक की यात्रा (एक और कुन्ती) पृ.४१
२६ भूख और कुलीनता (--,,--) पृ.१०९

२७	सम्बल	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.५८
२८	अभाव	(--,,--)	पृ.१३६
२९	एक रात : एक शव	(पुल टूटने से पहले)	पृ.५४
३०	राजम्मा	(--,,--)	पृ.७५
३१	बस इतना भर ही	(--,,--)	पृ.१०८
३२	चैना की पत्नी	(एक और कुन्ती)	पृ.७९
३३	शरीर से परे	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.१६२
३४	हिमाल की बेटी	(--,,--)	पृ.१४९
३५	साँचे और कला	(साँचे और कला)	पृ.२९
३६	नई ज्यामिति	(--,,--)	पृ.३१
३७	समझौता	(--,,--)	पृ.९१
३८	नाग - फाँस	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.५५
३९	भोगा हुआ यथार्थ	(पुल टूटने से पहले)	पृ.१२८
४०	सत्य को जीने की राह	(एक और कुन्ती)	पृ.३
४१	चाची	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.१५३
४२	बेमाता	(पुल टूटने से पहले)	पृ.६६
४३	फासिल,इन्सान और	(--,, --)	पृ.९०
४४	राग और अनुराग	(-- ,, --)	पृ.१४६
४५	रहमान का बेटा	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.२६
४६	सम्बल	(--,,--)	पृ.५६
४७	जज का फैसला	(--,,--)	पृ.८२
४८	स्वर्ग और मर्त्य	(साँचे और कला)	पृ.१९
४९	पुल टूटने से पहले	(पुल टूटने से पहले)	पृ.१०
५०	चिरन्तन सत्य	(एक और कुन्ती)	पृ.९०
५१	धरती अब भी घूम रही है	(धरती अब भी घूम रही है)	पृ.९
५२	छोटा चोर बडा चोर	(साँचे और कला)	पृ.६८
५३	पुल टूटने से पहले	(पुल टूटने से पहले)	पृ.१२
५४	एक मौत समन्दर किनारे	(— " —)	पृ.३५

५५	सलीब	(पुल टूटने से पहले)	पृ.१५५
५६	मटकन और मटकन	(,,)	पृ.२५
५७	-- वही --	(,,)	पृ.२२
५८	बस इतना मर ही	(,,)	पृ.१०४
५९	एक और कुन्ती	(एक और कुन्ती)	पृ.१२ ।